UNIVERSAL LIBRARY

OU_178968

UNIVERSAL LIBRARY

**OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY**

Call No. H83.1/S94D Accession No. H2973

Author स्टीवेन्सन, राबर्ट लुई ।

Title डाक्टर जेकिल एवं मिस्टर हाइड

This book should be returned on or before the date last marked below.

# डाक्टर जेकिल एवं मिस्टर हाइड

एक मनोरंजक वैज्ञानिक कहानी

# डाक्टर जेकिल एवं मिस्टर हाइड

पाश्चात्य सुप्रसिद्ध लेखक

**श्री राबर्ट लुई स्टिवेन्सन**

की इसी नाम की कहानी का
हिन्दी अनुवाद

अनुवादक

**रूपनारायण पाण्डेय**

**अशोक-प्रकाशन**

लखनऊ

प्रथम संस्करण १९५५

सर्वाधिकार-स्वरक्षित

मुद्रक—
राय साहब विश्वम्भरनाथ भार्गव,
स्टैन्डर्ड प्रेस, इलाहाबाद

# डाक्टर जेकिल एवं मि० हाइड

## १

## रहस्य

लंदन के एटर्नी मिस्टर अटर्सन का चरित्र साधारण जनता की दृष्टि में एक आश्चर्य कहा जा सकता है। उनकी प्रतिदिन की जीवन-चर्या में एक विशेषता देखी जाती थी। उनके मुख का भाव सदा ही रूखा रहता था और उसमें हँसी तो शायद ही कभी दिखाई देती थी। बोलते वह बहुत ही कम थे और जब कभी बोलते थे तो उसमें उन का चरित्र-गत गांभीर्य बना रहता था।

लोग उनको पुराने ढंग का दकियानूसी कहते थे। कारण, वह समाज में बहुत ही कम मिलते-जुलते थे। लेकिन जब कभी कोई बन्धु-बांधव या इष्ट-मित्र किसी सामाजिक काम में या सभा-समिति में शामिल होने के लिए निमंत्रण करता था तो वह इन्कार नहीं करते थे। बिना सोच-विचार के खाते-पीते थे। इस समय उनका स्वरूप उनके मुख और आँखों में खिल उठता था। मानवता

के लक्षण, जिन्हें वह दबा रखने की चेष्टा करते थे, उस समय बाहर प्रकट हो पड़ते थे।

आमोद-प्रमोद को वह पसंद करते थे। किन्तु बीस वर्ष के भीतर किसी ने उन्हें किसी थियेटर की दहलीज पर पैर रखते नहीं देखा। परोपकारी वह हृदय और मन से थे। किन्तु बातचीत में किसी को इसका पता नहीं लग पाता था—केवल उनके काम से ही लोग जान पाते थे। मनुष्य की भूल-चूक और दोष को वह जितना बर्दाश्त करते थे, उतना ही दूसरी ओर आपत्ति-विपत्ति में उनकी सहायता करने में आग्रह दिखाते थे।

इस तरह के अद्भुत चरित्र के आदमी मि० अटर्सन अकेला निःसंग जीवन बिता रहे थे। यह बात न थी कि उनके दो एक जने मित्र या बान्धव न हों। उनके मित्र चुनने में भी कुछ विशेषता थी। वह उन्हीं को मित्र कह कर स्वीकार करते थे, जिनसे उनका रक्त का सम्पर्क था अथवा जो बहुत दिन से परिचित होते थे। इस आत्मीयता या सुदीर्घ परिचय के आधार पर अगर अंतरंगता क़ायम हो जाती तो फिर वह प्रीति का बन्धन अटूट होता था।

मि० रिचार्ड एन्फ़ील्ड के साथ उनकी घनिष्ठता इसी तरह बहुत अधिक बढ़ गई थी। एन्फ़ील्ड थे शहर के एक प्रसिद्ध आदमी और मि० अटर्सन के दूर के नाते के जाति-

भाई। जाति-भाई के हिसाब से हो और चाहे बन्धु के हिसाब से हो, दोनों में परस्पर आन्तरिकता का तनिक भी अभाव न था और यह बात दोनों को एक साथ देखते ही अच्छी तरह समझ में आ जाती थी।

सप्ताह के सभी दिनों के बीच रविवार में एक मादकता होती है। इस दिन की सभी राह देखा करते हैं। बच्चे और किशोर छुट्टी का आनन्द लेते हैं और सयाने लोग सप्ताह की थकान दूर करते हैं। मि० अटर्सन और मि० एन्फ़ील्ड इस दिन सन्ध्या के समय घूमकर मन बहलाते हैं। दोनों मित्र एक साथ घूमने निकलते हैं। आँधी-पानी-कोहरा या बर्फ का गिरना, किसी बाधा को वे नहीं मानते। यह समय जैसे उनका अपना है—इस पर उनका पूरा अधिकार है। सप्ताह भर चाहे जितना काम रहे, पर इस दिन वे कोई काम करने को बाक़ी नहीं रखते। यहाँ तक कि आमोद-प्रमोद के निमंत्रण को भी जवाब दे देते हैं और अपने धंधे के काम-काज को भी पड़ा रहने देने में भी उनमें से किसी को कोई हिचक नहीं होती।

ऐसे ही एक रविवार को दोनों मित्र घूमने निकले थे। वे लंदन की ऐसी बस्ती से जा रहे थे जहाँ कामकाजी लोगों की बड़ी भीड़ रहती है। सड़क छोड़कर वे पास की एक छोटी गली में घुसे। रास्ता चौड़ा न था; किन्तु वहाँ

शोरगुल बिल्कुल न था। और दिनों में यह रास्ता एक छोटा-मोटा व्यवसाय का केन्द्र हो उठता है। इस स्थान के सभी दूकानदार अच्छे रोजगारी हैं—उज्ज्वल भविष्य की सब आशा रखते हैं। छोटी-मोटी दूकानों का अगला हिस्सा बढ़िया सामान की सजावट से वैसा ही अच्छा लगता है जैसे आदमी का हँसता हुआ चेहरा। रविवार होने के कारण आज इस गली में आदमी विरले ही नज़र आते हैं। दूकानों में बिक्री की चीजों पर भी आवरण पड़ा हुआ है। तो भी वे सुन्दर आवरण राह चलनेवालों की दृष्टि अपनी ओर खींच लेते हैं।

बाएँ हाथ को पूर्व की ओर जो रास्ते का मोड़ है, उससे दो घर छोड़कर खड़े होने से दूकानों की क़तार को तोड़कर एक और गली निकली है। वह गली एक खुले हुए छोटे-से मैदान में जा मिली है। ठीक उसी जगह पर एक दोमंज़िला मकान है।

यह मकान कुछ अजीब ढंग का बना है। बाहर से देखने पर घर के मालिक की पसंद का समर्थन नहीं किया जा सकता। हवा और रोशनी के पहुँचने की कोई राह ही उसमें नहीं रखी गई। किसी खिड़की का चिह्नमात्र उसमें नज़र नहीं आता। केवल नीचे के खण्ड में भीतर जाने का एकमात्र दरवाज़ा है। ऊपर की दीवाल मैली और धूल से

भरी हुई है। जान पड़ता है, जैसे बनने के बाद से ही वह भारी लापरवाही और अनादर पाती रही है। मालूम पड़ता है, उसके रूप और सजावट की ओर ध्यान देनेवाला कोई नहीं है।

घर के दरवाज़े में न कोई जंजीर है और न बिजली की घंटी का बटन ही कहीं दिखाई पड़ता है। दरवाज़े की सीढ़ियों पर फेरी में माल बेचने वाले लड़कों का थोड़ा बहुत माल सजाया रखा रहता है। स्कूली लड़के जिन्होंने अभी हाल ही में सिगरेट पीना सीखा है, उनको भी वक्त-बेवक्त उस जगह देखा जाता है। उनका उत्पात भी इस घर को बहुत सहना पड़ता है। उनके उपद्रव के चिह्न भी इस घर के अंग में जहाँ-तहाँ बनते रहते हैं। लेकिन उन्हें वहाँ से भगाने या उन चिह्नों को मिटाने की चिन्ता किसी को जैसे नहीं है।

मि० एन्फ़ील्ड और मि० अटर्सन गली के उस सिरे पर थे। जब वह गली के इस सिरे पर पहुँचे तब मि० एन्फ़ील्ड ने हाथ की छड़ी उठाकर उस घर की ओर मित्र को मुख़ातिब किया।

मि० अटर्सन ने उस घर की ओर देखकर कहा—"इस घर के बारे में तुम क्या कुछ जानते हो मित्र?"

मि० एन्फ़ील्ड ने कहा—"निश्चय ही जानता हूँ।

केवल जानता हो नहीं, बहुत दिनों को एक घटना के साथ यह मकान मुझे भूलता ही नहीं।"

मि० अटर्सन ने कहा—"ऐसी बात है! वह घटना कैसी और क्या है?" अटर्सन की आवाज़ में थोड़ा सा विस्मय प्रकट हो रहा था।

मि० एन्फ़ील्ड ने कहा—"बात कुछ अस्वाभाविक सी है। एक दिन मैं बहुत देर से घर लौट रहा था। जाड़े के दिन थे। रात तीन बजे से कम न होगी। जिस मोहल्ले से आ रहा था, वहाँ लाल्टेनों के खंभों के सिवा और कुछ भी न था। सन्नाटे की जाड़ों की रात थी। सारा शहर नींद की गोद में विश्राम कर रहा था। एक के बाद एक रास्ता पार कर रहा था। कहीं पर कोई मनुष्य नहीं देख पड़ रहा था। केवल सरकारी लाल्टेनों का जलूस नज़र आ रहा था। मनमें बहुत डर मालूम हो रहा था। एक पुलीस का सिपाही भी अगर कहीं मिल जाता तो शायद भय और ख़ौफ़ बहुत कम हो जाता। एकाएक मैंने क्या देखा, जानते हो? थोड़ी ही दूर पर दो छाया-मूर्त्तियाँ हिल उठीं। ग़ौर से देखा, उनमें एक ठिंगने क़द का आदमी कुछ लँगड़ाता-सा लंबे-लंबे डग रखता पूर्व की ओर आगे बढ़ता आ रहा है। दूसरी छाया-मूर्ति एक आठ-दस साल की लड़की है। मालूम पड़ा, दोनों जने एक दूसरे

की ओर आगे बढ़ रहे हैं। इसके बाद जो कुछ मैंने देखा उससे मैं काँप उठा। दोनों जनों के पास आते ही वह बालिका ज़मीन पर गिर पड़ी। और वह आदमी उसे अमानुषिक भाव से, एक राक्षस की तरह, उसे दोनों पैरों से कुचलने लगा। उस आदमी के मन में कोई उत्तेजना नहीं थी। ख़ूब शान्त भाव से ही वह पिशाच यह काम कर रहा था। सुनने में यह घटना ऐसी कुछ भयानक नहीं जान पड़ती; किन्तु उस दृश्य को आँखों से देखकर आदमी अपने दिमाग को सही नहीं रख सकता। मुझमें भी सोचने-विचारने की ताव नहीं रही। दौड़कर उस पाजी के कोट का कालर मैंने मज़बूती के साथ पकड़ लिया। न जाने कहाँ से मुझमें इतनी शक्ति आ गई। मैं उसे घसीट कर उस जगह ले आया, जहाँ वह लड़की ज़मीन पर पड़ी कराह रही थी। इसी बीच में उस लड़की के आस-पास बहुत से लोग जमा हो गये थे। वह पाजी उस समय भी मेरे हाथ में था। वह शान्त भाव से खड़ा रहा, मुझसे अपना गला छुड़ाने की या हाथापाई करने की उसने तनिक भी कोशिश नहीं की। उसके मुँह या आँखों में अपराधी का भाव नहीं था। वह ऐसे खड़ा था जैसे कुछ हुआ ही नहीं। उसने केवल एक बार मेरे मुँह की ओर कनखियों से देखा। उसकी उस दिल दहला देने-

वाली कुत्सित दृष्टि से मेरे हवास गुम हो गये। मेरे माथे में पसीना आ गया।"

"जो लोग उस चोट खाई हुई लड़की को घेरे खड़े थे, वे उसी लड़की के घर के आदमी थे। लड़की इतनी रात को डाक्टर को बुलाने के लिए घर से निकली थी। वह डाक्टर भी अब घटनास्थल पर आ गये थे। उन्होंने परीक्षा करके कहा—चोट जान लेनेवाली नहीं है, न उतनी गहरी ही है। मगर लड़की अचानक आक्रमण से डर बहुत गई है।"

"डाक्टर के रंगढंग देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। लेकिन बातचीत से मालूम हुआ कि वह एडिनबरा के आदमी हैं। यहाँ के नहीं हैं। इतनी बड़ी घटना का होना सुनकर भी उन्होंने उस पर विशेष ध्यान नहीं दिया। सिर्फ़ बीच-बीच में वह अपराधी की ओर बार-बार ताकने लगे। लेकिन मेरे मन में पहले ही से यह बात समाई हुई थी कि मैं अपराधी को यों नहीं छोड़ूँगा—उसे इसकी सज़ा अवश्य ही दूँगा। लड़की के घर के लोग ऐसा भाव दिखाने लगे कि वे उसे मार ही डालेंगे। लेकिन मैंने उसे और तरह की सज़ा देना चाहा।"

"मैंने उससे स्पष्ट करके कहा—'देखो, तुमने जो अपराध किया है, उसके बदले में हम तुम्हें बहुत बड़ी

हानि पहुँचा सकते हैं। हम लंदन के एक सिरे से दूसरे सिरे तक इस घटना का प्रचार कर देंगे। सबको तुम्हारी यह नीचता मालूम हो जायगी। समाज में अगर तुम्हारा कुछ सम्मान या नाम है तो वह तुम खो दोगे। और अगर तुम्हारे कोई बंधु-बांधव हैं तो उनकी सहानुभूति और दया से भी तुम बंचित हो जाओगे। इस निन्दा, तिरस्कार तथा बदनामी का बोझा तुम्हें जिंदगी भर ढोना पड़ेगा।"

"अब की वह आदमी बोला। उसने शान्त भाव से कहा—'देखिए, एक अकस्मात हो जाने वाली दुर्घटना को आप लोग अगर इतनी बड़ी बनाकर फैलाना चाहते हैं अथवा मेरी दुर्बलता से फ़ायदा उठाने के लिए अविचार करना चाहते हैं तो मैं लाचार हूँ। मगर सभी भले आदमी झगड़ा बचाना चाहते हैं, मैं भी झगड़ा नहीं करना चाहता—आप लोग कितने रुपए चाहते हैं?' हमने उसे पेंच में डाला। कह दिया—एक हज़ार पौंड लेंगे।"

"मगर उस आदमी ने इतनी बड़ी रकम का दावा मान लेने में तनिक भी आपत्ति नहीं की। फौरन वह राज़ी हो गया। इसके बाद वह हमें यह रकम देने के लिए कहाँ ले गया, जानते हो? इसी घर के दरवाज़े पर। यहाँ पहुँच कर उसने अपने पाकेट से एक चाभी निकाली, दरवाज़ा खोलकर भीतर गया। थोड़ी देर बाद जब वह

बाहर निकला तब उसके हाथ में नगद दस पौंड और बाक़ी रकम का एक चेक था। चेक को मैंने अच्छी तरह जाँच कर देखा। नीचे स्पष्ट अक्षरों में जो दस्तख़त थे, वे एक ऐसे आदमी के नाम के थे, जिसका नाम हम अक्सर सुना करते हैं। उस आदमी का नाम इस समय मैं तुमको *बता न सकूंगा।* वह बड़े प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित आदमी हैं। उस नाम को देखकर मेरे मन में तरह-तरह के ख़याल आने लगे। यह चेक जाली तो नहीं है? लेकिन उसे जाली या झूठा चेक ही कैसे कहूँ? रात के चार बजे चाभी खोल कर उसे इस घर के भीतर घुसते भी मैंने देखा, इतनी बड़ी रकम का चेक भी फ़ौरन लिख लाया जिसे कोई भी भुना सकता है—'बेअरर चेक'। सन्देह के लिए तनिक भी गुञ्जाइश नहीं रही। मुझे इधर-उधर करते देखकर उसने कहा—'घबराने की कोई बात इसमें नहीं है महाशय। न हो सवेरे तक मैं आप लोगों के साथ ही रहूँगा। बैंक खुलने पर मैं आप ही चेक भुनाकर दे दूँगा।' इसके ऊपर तो कुछ कहा नहीं जा सकता। लड़की के बाप, डाक्टर और उस आदमी को लेकर बाकी रात मुझे बाहर की बैठक में ही बितानी पड़ी। सवेरे मेरे ही घर में सबने सुबह का नाश्ता किया। फिर हम लोग बैंक गये। रास्ते भर मैं यही सोचता रहा कि यह चेक निश्चय ही

जाती है। लेकिन बैंक पहुँचने पर मुझे अपना ख्याल बदलना ही पड़ा। चेक आसानी से भु— —' सब रकम हाथ में आ गई।"

मि० अटर्सन कह उठे—"त ज्जुब की बात है जी!"

मि० एन्फ़ील्ड ने कहा—"हाँ। मेरे लिए तो यह घटना बहुत ही अप्रितिकर थी।"

थोड़ी देर बाद मि० अटर्सन एकाएक कह उठे—"तुम क्या कह सकते हो जिस आदमी के नाम के दस्तख़त उस चेक पर थे, वह उसी जगह रहता है या नहीं?"

मि० एन्फ़ील्ड—"रहना तो चाहिए। लेकिन उनका नाम तो जहाँ-तहाँ देखने को मिलता है। उनका पता भी और जगह को मैंने देखा है।"

मि० अटर्सन—"तुमने क्या उस दिन उस आदमी से इस बारे में कुछ नहीं पूछा?"

मि० एन्फ़ील्ड—"ना। प्रयोजन से अधिक प्रश्न करने की मेरी आदत नहीं है।"

मि० अटर्सन—"सो तो अच्छी ही बात है।"

मि० एन्फ़ील्ड ने फिर शुरू किया—"मगर मैंने इस घर को अच्छी तरह जाँच कर देखा है। इसे ठीक घर नहीं कहा जा सकता। एक छोटे से द्वार के सिवा इसमें प्रवेश करने का दूसरा कोई रास्ता नहीं है। और

उस रात वाले आदमी के सिवाय किसी दूसरे आदमी को इस घर के भीतर घुसते नहीं देखा जाता। हाँ, इस घर की नीचे की मंज़िल में मैदान की ओर तीन खिड़कियाँ ज़रूर हैं। खिड़कियाँ हर वक्त बन्द रहती हैं; लेकिन ख़ूब साफ़-सुथरी हैं। घरके भीतर जो चिमनी है, उसमें भी धुआँ निकलता है। तो निश्चय ही यह कहना होगा कि इस घरके भीतर कोई आदमी रहता है। लेकिन ज़ोर देकर यह कहना कठिन है कि इसी घर में कोई आदमी रहता है। इस घरके आस-पास के घर इतने सटे हुए हैं कि यह ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता कि कौन घर कहाँ शुरू होता है और कहाँ ख़तम होता है।"

दोनों मित्र फिर चुपचाप राह चलने लने। मि० अटर्सन ने पूछा—जिस आदमी ने उस लड़की को पैरों से कुचला था, उसका नाम क्या है?"

मि० एन्फ़ील्ड ने कहा—"नाम बताने में कोई बाधा नहीं है मुझे। उसका नाम है मिस्टर हाइड।"

मि० अटर्सन—"वह देखने में कैसा है? सूरत-शकल कैसी है?"

मि० एन्फ़ील्ड—"यह बताना तो बहुत सहज नहीं है। चेहरा उसका विकट सा है! ऐसे बदसूरत चेहरे का आदमी मैंने तो कभी देखा नहीं। लेकिन मैं यह न बता

सकूंगा कि उसके चेहरे में कहाँ पर कौन सी ख़राबी है। तो भी मैं कहूँगा कि उसके चेहरे में कहीं-न-कहीं कोई ऐसी ख़राबी है जो आँखों को खटकती है, अच्छी नहीं लगती।"

फिर दोनों जने राह चलने लगे। बहुत देर तक दोनों चुप रहे।

मि० अटर्सन बड़े सोच-विचार और उधेड़बुन में पड़े जान पड़ रहे थे। अन्त को वही बोले—"तुम ठीक जानते हो कि दरवाज़े की चाभी उसके पास थी!"

मि० एन्फील्ड ने कहा—"हाँ, इसमें कोई संदेह की गुंजाइश नहीं है। यहाँ तक कि अब भी उसी के पास चाभी है। कई दिन पहले भी मैंने उसे चाभी से दरवाज़ा खोलते देखा है।"

मि० अटर्सन ने कुछ नहीं कहा। सिर्फ़ एक दबी हुई लम्बी साँस उनके मुँह से निकली।

---

२

# मि० हाइड की खोज में

घर लौटकर उस रात को मि० अटर्सन भोजन के टेबिल पर बैठे अवश्य, किन्तु खाने-पीने में उनकी रुचि नहीं थी। हर एक रविवार को वह भोजन के बाद रात को आग के पास बैठकर बहुत देर तक पढ़ते रहते थे। आधी रात या बारह बजे के पहले नहीं उठते थे। उस दिन रात को उन्होंने एक मोमबत्ती जलाकर अपने आफ़िस के कमरे में प्रवेश किया। वहाँ के एक संदूक को खोला। उसके एक गुप्त खाने से एक कागज़ निकाला। वह कागज़ एक लम्बे लिफाफे में रखा हुआ था। लिफाफे के ऊपर लिखा था—"डा० जेकिल का वसीयतनामा"। लिफाफा हाथ में लेकर वह गहरी चिन्ता में डूब गये। उनके माथे पर चिन्ता के बल पड़ गये। वह उस वसीयतनामे को पढ़ने लगे।

यह वसीयतनामा जिसका था उसने इसे अपने हाथ से लिखा था। यद्यपि यह कागज़ इस समय मि० अटर्सन के जिम्मे में है, तो भी इसे लिखने के समय इसके लेखक ने मि० अटर्सन की कोई सहायता नहीं पाई थी।

वसीयतनामे की भाषा बहुत ही सीधी-सादी और स्पष्ट है। बहुत ही साफ़ तौर से उसमें लिखा हुआ है कि 'डा० हेनरी जेकिल की मृत्यु होने के बाद उनकी चल-अचल सारी जायदाद के मालिक होंगे उनके विशेष उपकारी बन्धु मि० हाइड।' केवल इतना ही नहीं, यह बात भी उसमें लिखी हुई है कि 'अगर अचानक अप्रकाश्य भाव से किसी दिन डाक्टर जेकिल ग़ायब या लापता हो जायँ तो और तीन महीने से ज्यादा लापता रहें तो भी फ़ौरन, बिना विलंब के, उनकी सारी सम्पत्ति के मालिक मि० हाइड हो जायँगे।' यह वसीयतनामा बहुत दिनों से मि० अटर्सन की आँखों में काँटा सा खटक रहा था। क़ानूनीपेशा के हिसाब से वह इस वसीयतनामे का समर्थन किसी भी तरह नहीं कर सकते। साधारण आदमी की दृष्टि से भी इसे नहीं मान लिया जा सकता।

मि० अटर्सन ने मन ही मन कहा—पागल की सनक के सिवा यह और क्या हो सकता है!

उन्होंने फूँक मारकर बत्ती बुझा दी। एक ओवर-कोट गले में डाला और उसी रात्रि के समय कैवेन्डिश स्क्वायर की ओर चल दिये।

कैवेन्डिशस्क्वायर में उनके एक मित्र रहते थे। उनके यह मित्र बड़े नामी डाक्टर थे। उनका नाम था डाक्टर

लेनियन। जैसी उनकी शोहरत थी वैसी ही उनकी डाक्टरी चलती थी। रोज़ उनके घर पर ही बेशुमार रोगियों की भीड़ लगी रहती थी। दूर-दूर से रोगी उनका नाम सुनकर इलाज कराने आते थे।

मि० अटर्सन ने मन में सोचा कि इस मामले में अगर कोई कुछ जानता है तो डा० लेनियन ही जानते होंगे। सोचते-सोचते वह डा० लेनियन के दरवाज़े पर पहुँच गये। नौकर ने आकर दरवाज़ा खोल दिया। यह नौकर उन्हें पहले ही से जानता-पहचानता था। इसलिए यहाँ उनका विशेष समय नष्ट नहीं हुआ। वह सीधे उस कमरे में दाख़िल हो गये जहाँ मि० लेनियन थे।

डा० लेनियन इस समय घर में अकेले ही थे। आदमी वह देखने में हृष्ट-पुष्ट, स्वस्थ और सुन्दर थे। चेहरे पर सुर्खी थी और बाल सिर के असमय में ही सफ़ेद होने लगे थे। मित्र को देखते ही वह कुर्सी से उछल पड़े। दोनों हाथ बढ़ाकर नाटकी ढंग से उनका स्वागत किया। लेकिन इस स्वागत-संवर्द्धना में अभिनय का भाव या बनावट नहीं थी—यह हार्दिक स्वागत और प्रसन्नता थी।

जब दोनों स्कूल में पढ़ते थे, तभी से दोनों को जान-पहचान और मित्रता थी। अब कामकाज के जीवन में

उस मित्रता में तनिक भी कमी नहीं हुई थी। दोनों दूसरे से मिलकर, दूसरे को पास पाकर बहुत प्रसन्न होते हैं, सन्तोष पाते हैं।

दो-चार इधर-उधर की बातों के बाद मि० अटर्सन ने असल बात चलाई। बोले—"देखो, मेरी धारणा है कि हेनरी जेकिल के पुराने मित्रों में हमी दो जने हैं। तुम्हारा क्या ख़याल है?"

मि० लेनियन—"मैं भी तो यही कहता हूँ। लेकिन इससे क्या आता-जाता है? मैं अब उनकी बहुत कम ख़बर रखता हूँ।"

मि० अटर्सन—"यह बात है? मैं तो जानता था कि तुम दोनों की मित्रता और मिलना-जुलना अब भी वैसा ही है।

मि० लेनियन—"दस वर्ष पहले था। उसकी बात छोड़ो। उससे मेरा मत किसी दिन नहीं मिला।"

डा० लेनियन का भाव रूखा हो उठा। इससे मि० अटर्सन ने जैसे कुछ स्वस्ति अनुभव की। वह मन ही मन सोचने लगे—वैज्ञानिक खोज में इन दोनों का मत नहीं मिलता होगा।

मि० अटर्सन के ज़रा देर चुप रहने पर डाक्टर का वह रूखापन दूर हो गया। तब अटर्सन ने भूमिका बाँधना

छोड़कर असल बात पूछी। बोले—"तुम जेकिल के किसी परिचित आदमी को जानते हो? हाइड नाम के आदमी को?"

मि० लेनियन ने कहा—"हाइड? नहीं, ऐसा कोई नाम तो मैंने नहीं सुना।"

इतना परिश्रम करके इतना सा तथ्य संग्रह करके मि० अटर्सन घर लौट आये। बिछौने पर लेट ज़रूर रहे लेकिन इधर-उधर करवट बदलकर ही समय बीतने लगा। रात बढ़ते-बढ़ते धीरे-धीरे प्रभात का समय आने को हुआ। उनके थके हुए मन पर जैसे मन भर का बोझ लदा हुआ था। तरह-तरह के प्रश्नों के धक्कों से वह अभिभूत हो पड़े।

पास के गिर्जे की घड़ी में छः बज गये। मि० अटर्सन तब भी इस रहस्य को खोलने की कोशिश में लगे रहे। उनका ख़याल चारों ओर दौड़ रहा था—तरह-तरह की संभावनाएँ उनके मन में आ-जा रही थीं? सिनेमा के पर्दे की तरह उनके मन में घटना के दृश्य आने-जाने और बदलने लगे। उन्होंने जैसे अपनी आँखों के सामने देखा—गहरी रात में एक शहर का दृश्य सामने है। कहीं कोई आदमी नहीं है। केवल कतार की कतार लैम्प-पोस्ट (प्रकाश-स्तंभ) खड़े हैं। एक आदमी तेज़ी से चल रहा

है। उसके बाद आई एक बालिका। डाक्टर को बुलाकर वह दौड़ी आ रही है। उसका चेहरा गोरा और सुन्दर है। दोनों का सामना हुआ। वह आदमी बड़े डील-डौल का है। वह उस लड़की को गिराकर पैरों से रौंदने लगा। लड़की के करुण क्रन्दन को सुनकर भी उस आदमी को करुणा नहीं हुई।....इसके बाद उनकी आँखों के आगे एक अमीर के शयनगृह का दृश्य प्रकट हुआ। एक बहुत क़ीमती पलँग के ऊपर उनका मित्र सोया हुआ है। मित्र शान्तिपूर्ण सुख की नींद में है। वह शायद कोई सपना देख रहे हैं और उनके चेहरे पर हँसी झलक रही है।

एकाएक घर का दरवाज़ा खुल गया। पलंग पर से मसहरी हट गई। सोये हुए आदमी के पास वही उस लड़की को कुचलनेवाले नर-पशु की मूर्ति आ खड़ी हुई। उस आदमी को बहुत अख़्तियार दे दिया गया है—ज़बर-दस्त क्षमता का अधिकारी बना दिया गया है। इस गहरी रात में भी उनके मित्र को शय्या से उठना होगा और उसकी आज्ञा का पूरे तौर से पालन करना होगा।

रात भर वह मूर्ति दो रूपों में मि० अटर्सन की आँखों के आगे उपस्थित होती रही। जभी उन्हें ज़रा झपकी आई, तभी सामने वह मूर्ति आ खड़ी हुई। कभी धीरे-धीरे उनकी नींद से भरी आँखों के सामने आई, और कभी

तेजी के साथ उनके स्वप्न-राज्य के प्रकाश से जगमगा रहे शहर के भारी गोरखधन्धे के भीतर होकर दौड़ती चली गई। शहर की बड़ी सड़क के मोड़ में एक असहाय बालिका के कातर क्रन्दन की उपेक्षा करके वह उसे कुचलती रही है। किन्तु अटर्सन ने उस मूर्ति का चेहरा नहीं देख पाया। उन्हें स्वप्न में भी स्पष्ट नहीं दिखाई पड़ा, अथवा जब वह मूर्ति उन्हें चक्कर में डाल कर शून्य में जा मिली, तब भी नहीं देख पाया। इसी से शायद मि० हाइड प्रतक्ष को देखने की एक धुन उन पर सवार हो गई। उन्होंने सोचा, अगर एक बार आँखों से मि० हाइड को देख पाऊँ तो शायद यह गुत्थी सुलझाना या यह रहस्य खोलना सरल हो जायगा—फिर हस समस्या को हल करने में मुझे अधिक जोर न लगाना पड़ेगा। वह जानते थे कि सिल-सिलेवार प्रंखानुप्रंख रूप से विचार करने से कोई भी रहस्य विना खुले नहीं रहता। उनका इरादा क्रमशः पक्का होता गया। उन्होंने सोचा, बिना सोचे-समझे अन्ध पक्षपात के कारण हो अथवा किसी लाचारी की वजह से हो, उनके मित्र जेकिल ने इस अपने वसीयतनामे में ऐसी अस्वाभाविक बात लिखी है—मि० हाइड जैसे नीच आदमी को अपना उत्तराधिकारी बना दिया है। उन्होंने क्यों ऐसा किया है, इसका कारण उन्हें ढूँढ़ निकालना ही होगा। कम से कम इस आदमी का

चेहरा एक बार देख लिये बिना किसी तरह उन्हें कल नहीं पड़ सकती—जिसके हृदय में माया-ममता का लेशमात्र नहीं है और जो एन्फ़ील्ड—जैसे सरल आदमी के मन में भी घृणा उत्पन्न कर सका है।

उसी दिन से मि० अटर्सन उस अद्भुत बनावट के मकान की रोज़ निगरानी करने लगे। सवेरे वे जब तक सब लोग आफ़िस नहीं चले जाते, दोपहर को—जब वह स्थान कामकाजी और ख़रीदार लोगों की व्यस्तता से चंचल हो उठता है, जाड़े की रात को—जब चारों ओर कोहरा छा जाता है, अर्थात् सभी समय मि० जेकिल के वकील मित्र मि० अटर्सन को उस मकान के पास एक ख़ास जगह पर उस आदमी की ताक में देखा जाता था। वह प्रायः कहा करते कि "वह अगर हाइड नाम रखकर अपने को छिपाये रखना चाहता है तो मैं भी खोजी नाम रखकर उसके पीछे-पीछे घूमूँगा—उसका पीछा करूँगा और पता लगा-कर ही छोड़ूँगा।

अन्त को एक दिन उनका धीरज के साथ पीछा करना सफल हो गया। जाड़े की रात थी। हवा में कुहासा काफी था। रास्ते नाचघर के फ़र्श की तरह झकझका रहे थे। रास्ते की लालटेनें स्थिर ज्योति से जल रही थीं। उनकी परछाहीं भी ज़रा हिलती-डुलती नहीं थी। दस बज

गये। दूकानें बन्द हो गईं। वह जगह सन्नाटे से भर गई। आस-पास के घरों से हल्का-सा लोगों के बोलने-चालने का शब्द हवा में बहुत दूर तक फैलने लगा। दूर से किसी के आने पर उसके पैरों की आहट खूब अच्छी तरह सुनाई पड़ती है—"खटास-खटास—खट-खट!"

कुछ देर हुई, मि० अटर्सन अपने नित्य के निर्दिष्ट स्थान पर एक खम्भे की आड़ में आकर जम गये थे। उन्हें जान पड़ा, जैसे कोई हल्की चाल से आगे बढ़ता आ रहा है—उसके पैर बराबर या एक-से नहीं पड़ रहे हैं। अब की उनके मन में यह दृढ़ धारणा हुई कि शायद उनका उद्देश्य सफल होने जा रहा है! सफलता की उत्तेजना से उनका शरीर और मन रोमांचित हो उठा। वह पहले ही से चल कर उस घर के पास की छोटी गली में आ खड़े हुए।

पैरों का शब्द तेज़ी से पास आने लगा। क्रमशः वह आहट अधिक स्पष्ट होने लगी। गली की आड़ से उन्होंने देख लिया कि किस तरह के आदमी का उन्हें सामना करना है।

वह आदमी नाटे क़द का था। वेष-भूषा उसकी सीधी-सादी थी। दूर से देखकर भी उस आदमी के ऊपर सन्तुष्ट नहीं हुआ जाता। वह सीधे उस घर के दरवाज़े की ओर बढ़ गया। इस समय उसने खूब फुर्ती और

चटपटी दिखाई। घर के पास पहुँचते ही उसने जल्दी से पाकेट से एक चाभी निकाली—जैसे कोई अपने घर में पहुँचकर करता है, ठीक वैसे ही।

मि० अटर्सन गली से निकलकर आगे बढ़ आये और उस आदमी के कंधे पर हाथ रखकर बोले—"मेरा ख़याल है, आप मि० हाइड हैं—ठीक है न?"

वह आदमी जैसे कुछ चौंक उठा। किन्तु वह दम भर के लिए। प्रश्न करने वाले के मुँह की ओर बिना देखे ही उसने शान्त भाव से कहा—"हाँ। मेरा नाम यही है—आप अपना मतलब बेखटके कह सकते हैं।"

मि० अटर्सन—"देखता हूँ, आप भीतर जा रहे हैं। मैं डाक्टर जेकिल का एक पुराना मित्र हूँ—मेरा नाम मि० अटर्सन है। गैंट स्ट्रीट में रहता हूँ। आपने निश्चय ही मेरा नाम सुना होगा। अब हम दोनों की भेंट का संयोग जब हो गया है, तब निश्चय ही आपको मुझसे ज़रा देर बातचीत करने में कोई आपत्ति नहीं होगी।"

मि० अटर्सन ने अपना वक्तव्य खूब स्पष्ट भाव से ही सुनाया।

मि० हाइड ने सिर उठाये बिना ही कहा—"डा० जेकिल इस समय आपको घर में नहीं मिलेंगे।" इतना

कहकर हाइड ने चाभी घुमाई। इसके बाद सिर झुकाये हुए ही कहा—"आपने मुझे पहचाना कैसे ?"

मि० अटर्सन ने कहा—"आपही की तरफ़ से जाना है—खैर, इसे छोड़िए, आप क्या मेरी एक बात मानेंगे ?"

मि० अटर्सन ने यह बात अनुनय करके कही।

मि० हाइड ने कहा—"मानूँगा। क्या बात है ?"

मि० अटर्सन ने कहा—"अपना चेहरा क्या एक बार दिखावेंगे ?"

मि० हाइड ने कुछ इधर-उधर करने के बाद एकाएक सामने घूमकर मि० अटर्सन की ओर ताका। थोड़ी देर परस्पर एक दूसरे की ओर ताकते रहने के बाद मि० अटर्सन ने कहा—"फिर आपसे मुलाक़ात करना पड़ सकता है।"

सुनकर मि० हाइड कुछ खुश ही हुए—ऐसा जान पड़ा। बोले—"तो मेरा यह पता रख लीजिए।"

इतना कहकर उन्होंने 'सोहो' के एक रास्ते का छपा हुआ कार्ड मि० अटर्सन के हाथ में दे दिया।

उनके इस उत्साह को देखकर मि० अटर्सन को संदेह हुआ कि यह आदमी भी क्या जेकिल के उस वसीयतनामे की ही बात सोच रहा है ?

साथ ही साथ अपने मन के भाव को छिपाकर वह

पता-ठिकाना पाने के लिए आनन्द प्रकट करने का भाव दिखाने लगे।

मि० हाइड ने कहा—"अब बताइए तो आपने मुझ को कैसे पहचाना?"

मि० अटर्सन ने एक शब्द में उत्तर दिया—"चेहरे के वर्णन से।"

"किसका चेहरा? किसने वर्णन किया?"—मि० हाइड का स्वर बदल गया।

मि० अटर्सन ने कहा—"हमारे एक ऐसे ख़ास दोस्त हैं, जिन्हें हम दोनों ही जने जानते-पहचानते हैं।

"दोनों के एक ही मित्र?—कौन हैं वह?"—मि० हाइड का स्वर और भी कर्कश हो उठा।

मि० अटर्सन ने कहा—"यही मान लीजिए, डाक्टर जेकिल।"

मि० अटर्सन ने साधारण भाव से ही जवाब दिया, किन्तु मि० हाइड गुस्से से आग-बबूला हो उठे। बोले—"झूठ बात है! उसने कभी नहीं कहा।"

मि० अटर्सन ने घुमाकर जवाब दिया—"आइए चलिए, देखा जाय, किसकी बात सही है।"

इस जवाब से मि० हाइड हो-हो करके हँस उठे। किंतु उसी दम अद्भुत फुर्ती के साथ दरवाज़े से चाभी निकाल

कर घर के भीतर घुस कर भीतर से दरवाज़ा बंद कर लिया।

मि० हाइड इस तरह घर के भीतर अन्तर्द्धान हो गये। कुछ देर भौचक्के-से खड़े रहे मि० अटर्सन। उसके बाद धीरे-धीरे चलना शुरू किया। उस सगय उनके मन में भारी हलचल शुरू हो गई थी। एक पग चलते थे और दो पग पीछे लौटते थे—ऐसी दशा थी। उस समय बाहर की पृथ्वी बाह्य जगत् उनकी आँखों के आगे से अदृश्य हो गया था। रहस्य जैसे और भी जटिल होकर उनके सारे मन को छाप बैठा। इस समस्या की गुत्थी को क्या वह सहज में खोल सकेंगे ?

जितनी देर उन्होंने मि० हाइड को देखा था, उतनी ही देर में मि० हाइड के सम्बन्ध में उनको एक धारणा बन गई थी—नाटे क़द का एक आदमी है। उसका चेहरा फीका—अवशून्य है। मि० एन्फ़ील्ड ने ठीक कहा था कि उसके शरीर में कहीं कोई दोष-त्रुटि है, किन्तु वह दोष क्या है अथवा उसके किस अंग-प्रत्यंग में कहाँ पर है, यह समझना कठिन है और उसे बतलाना और भी कठिन है। वह जब अभी हँसा था तो वह हँसी स्पष्ट ही बनावटी और बेमन की थी। उसने जो कुछ बात की, वह टूटी और भर्राई हुई आवाज़ में। मगर हाँ, यह भी समझ पड़ा कि

भय और साहस, दोनों ही उसके मन में एक साथ काम कर रहे हैं।

केवल क्या इन्हीं कुछ दोषों के कारण मि० अटर्सन उससे नफ़रत करते आ रहे हैं? उनके मन ने कहा—"नहीं।" यह हो ही नहीं सकता। निश्चय ही इसके भीतर और कोई रहस्य छिपा हुआ है। अगर कोई रहस्य है तो उन्हें उसे खोज निकालना ही होगा, नहीं तो उन्हें कल नहीं पड़ेगी। मि० हाइड की मूर्त्ति उनकी आँखों के सामने बड़ी देर तक घूमती रही। उन्होंने मन-ही-मन कहा—"अगर इस आदमी को मैं मनुष्य कहकर स्वीकार कर लूँ तो वह सारी मानव-जाति का अपमान करना होगा। यह आदमी चाहे जो हो, अगर मैंने कभी किसी दिन शैतान की छाप कहीं देखी है तो वह आज बेचारे जेकिल के इस नवीन मित्र के मुख में आज देखी है।

३

# प्रतिज्ञा

मि० हाइड जिस गली में घर के भीतर चंपत हो गये, उस गली के मोड़ पर घूमते ही एक पुरानी बस्ती मिलती है। इस मोहल्ले के सभी मकानों पर बड़प्पन के चिह्न मौजूद हैं। बीते हुए जमाने के गौरव को धारण करने पर भी अब प्रायः सभी मकानों की दीवारें टूट-फूट गई हैं। एक मकान के अंदर कई किरायेदार अब रहने लगे हैं।

ऐसा आदमी नहीं है, जो यहाँ का किरायेदार न हो। चित्रकार और जादू का तमाशा दिखाने वालों से लेकर वकीलों के दलाल तक ने यहाँ अपने साइनबोर्ड टाँग रख हैं। एक घर में एक से अधिक रोजगार चल रहे हैं, ऐसे दृष्टान्त भी यहाँ बिरले नहीं हैं। केवल मोड़ से दूसरे नंबर पर पड़नेवाला मकान पूरे का पूरा एक आदमी के अधिकार में है। इस घर की बाहरी बैठक से ही एक स्वच्छंदता की आबहवा नज़र आती है। आस-पास

की धुँधली रोशनी इस पर जितनी आकर पड़ती है, उसी से रात के समय यह धारणा होती है कि इस मकान के ऊपर भाग्यलक्ष्मी ने कृपा करने में कोई कृपणता नहीं की है।

इस घर के सामने आकर मि० अटर्सन ने दरवाज़ा खटखटाया। एक नौकर ने आकर द्वार खोल दिया। उसकी वेष-भूषा साधारण नौकर की जैसी न थी। खूब फ़िटफ़ाट था। अवस्था कुछ अधिक थी। बहुत दिनों से ही वह इस घर में काम करता है—ऐसा जान पड़ता है।

मि० अटर्सन को वह अवश्य ही अच्छी तरह जानता-पहचानता था। उसका नाम था पूल।

मि० अटर्सन ने दरवाजे से ही पूछा—क्यों जी पूल, डाक्टर जेकिल घर में हैं?

"देखता हूँ" कहकर पूल पीछे को लौटा।

लेकिन मि० अटर्सन ने प्रतीक्षा नहीं की, नौकर के पीछे-पीछे सजे हुए सुदृश्य 'हाल' की ओर चले।

पूल ने कहा—"आप भोजन के कमरे में तनिक बैठिए। वहाँ आग भी है, उसके पास बैठकर ज़रा हाथ-पैर गरम कर लीजिए।"

मि० अटर्सन ने कहा—"अच्छा, मैं बैठता हूँ, तुम चटपट देख कर खबर दो।" इतना कहकर मि० अटर्सन गम्भीर होकर वहाँ बैठे रहे।

पूल ने लौटने में ज़रा भी देर नहीं की। आकर बोला—"नहीं हैं। कहीं निकल गये।"

मि० अटर्सन ने पूछा—अच्छा पूल, जिस घर में पहले चीर-फाड़ का सामान था, उसी घर से क्या मि० हाइड भीतर जाते हैं? डाक्टर साहब जब घर में रहते, तभी जाते हैं?"

पूल ने कहा—"जी हाँ। उनके पास भी एक चाभी है न।"

मि० अटर्सन ने पूछा—"तुम्हारे मालिक का उन पर अगाध विश्वास है—क्यों न?"

पूल ने कहा—"हाँ साहब, हम लोगों को मालिक ने ऐसा हुक्म दे रखा है कि उनकी सब आज्ञाओं का पालन हम लोग करें—उनकी कोई बात न टालें।"

मि० अटर्सन ने कहा—"अच्छा, मैंने क्या उन्हें कभी नहीं देखा?"

पूल ने कहा—"आप कैसे देखेंगे? वह तो यहाँ किसी दिन खाना-पीना नहीं करते। घर के इस तरफ वह आते ही नहीं। लेबोरेटरी के कमरे से ही वह आते-जाते रहते हैं।"

"अच्छा, अब मैं जाता हूँ पूल।"—कह कर वह चल दिये। पूल ने उन्हें श्रद्धा के साथ प्रणाम किया।

मि० अटर्सन अपने घर को लौट चले। उनके मन

में चिन्ता का ओर छोर न था। मामला चाहे कुछ भी हो, इस बारे में उनकी धारणा बिल्कुल [illegible] बेचारा जेकिल एक जाल में फँस गया है। शायद यह उसके किसी पुराने पाप का प्रायश्चित्त है। किन्तु उसके चरित्र में ऐसा क्या दाग पड़ा है, जिसके लिए उसे यह फल भोगना पड़ रहा है? वह अतीत स्मृति के पन्ने पलटने लगे—शायद कहीं कोई सूत्र हाथ लग जाय, इस आशा से।

किन्तु जो मन ठीक हालत में नहीं है, उसके सोचने-विचारने का मूल्य ही कितना है? मि० अटर्सन को सभी चिन्ताओं को—सोचने-विचारने को—डाक्टर जेकिल के उस वसीयतनामे की बातें उलट-पलट देने लगीं। मि०-हाइड को अपनी आँखों से देखकर उनकी इस धारणा ने जड़ पकड़ ली है, कि इसके भीतर कुछ ऐसा अंधकार में छिपा हुआ रहस्य है, जो जेकिल के निकट सूर्य के प्रकाश की तरह स्पष्ट और साफ है। और वही एक दिन उनके सर्वनाश का कारण बनकर प्रकट होगा।

और भी एक डर उनके मन में हो रहा था। अन्त को इसी डर ने उन्हें विशेष चिन्ता में डाल दिया। अगर हाइड उस वसीयत की खबर किसी तरह पा गया तो वह जेकिल की सम्पत्ति का उत्तराधिकारी होने के लिए पागल हो उठेगा, और अपने स्वार्थ के लिए ऐसा कोई

काम नहीं है जिसे वह न करेगा। तब तो यह मान लिया जा सकता है कि विपत्ति जेकिल के सिर पर सवार है।

सोचते-सोचते मि० अटर्सन उत्तेजित हो उठे। मन-ही-मन उन्होंने कहा—"मैं ही जेकिल का उद्धार करूँगा। लेकिन अगर जेकिल कहीं इस काम में मेरी थोड़ी सी सहायता करता!"

इसके पंद्रह दिन बाद की बात है। डाक्टर जेकिल ने एक दिन अपने पाँच-छः पुराने मित्रों की दावत की। जिन्हें निमंत्रण दिया गया वे सब ऊँचे दर्जे के, शहर के प्रसिद्ध और नामी आदमी थे। डाक्टर ने बढ़िया खाने-पीने का सामान परोस कर अपने उन सब मित्रों को तृप्त और सन्तुष्ट किया। खा-पीकर सभी बिदा हो गये, नहीं गये केवल मि० अटर्सन। न जाने का कारण और कुछ न था; यह उनका स्वभाव ही था। गपशप लड़ाने-वाले, बेकार बातें करने वाले वह न थे। इस कारण इस तरह के गपशप-पसन्द लोगों के बिदा होने पर निमंत्रण करनेवाले लोग सभी जगह मि० अटर्सन जैसे आदमी के साथ थोड़ा-सा वार्तालाप करने का आग्रह प्रकट करते थे।

यहाँ भी वही हुआ। मि० अटर्सन ज़रा देर ठहर गये। जेकिल उनके मित्र थे—बहुत दिनों के पुराने मित्र। अवस्था इस समय उनकी पचास के आसपास

होगी। उनका चेहरा इस समय भी निर्दोष बना हुआ है; उसमें कोई विकार नहीं उत्पन्न हुआ। डा० जेकिल को मि० अटर्सन ने एकान्त में पाया। डा० जेकिल ने भी पुराने मित्र से कुछ गपशप लड़ाना चाहा, जैसा कि दो अन्तरंग मित्र मिलने पर करते हैं। धीरे-धीरे डा० जेकिल आग के पास बढ़ आये। सामने आग के उस तरफ़ मि०-अटर्सन बैठे हुए थे।

मि० अटर्सन ने ही पहले बात शुरू की। उन्होंने कहा—"जेकिल, तुम से एक बात कहने के लिए बहुत दिनों से सोच रहा हूँ। तुम अपने वसीयतनामे की बात निश्चय ही न भूले होंगे?"

और कोई होता तो शायद इस प्रसंग को दबाने की—टालने की चेष्टा करता। लेकिन डा० जेकिल प्रसन्न ही हुए। ज़रा हँसकर बोले—"यह तुम्हारा दुर्भाग्य है अटर्सन जो तुमको अन्त में मुझ जैसा मवक्किल मिला!" इसके बाद जरा थमकर बोले—"मैं जानता हूँ कि मेरे उस वसीयतनामे के लिए सब से बढ़कर तुमको व्यथा हुई है। लेकिन यह थोड़ा-सा कष्ट तुमको न होता, अगर लेनियन मुझे हताश न करता। हम जब किसी वैज्ञानिक समस्या को समझने के लिए आगे बढ़े हैं तभी उसने मुझे निराश किया है—पीछे हट गया है। मैं

जानता हूँ कि लेनियन आदमी अच्छा है, लेकिन एक-दम अहमक है।"

लेनियन के प्रसंग को छोड़कर मि० अटर्सन ने कहा —"उस विल (वसीयत) का समर्थन मैंने कभी नहीं किया, आज भी नहीं करता हूँ। ख़ासकर अब, जब तुम्हारे नये मित्र हाइड के संबंध में कुछ-कुछ मैं जान पाया हूँ।"

डा० जेकिल के मुँह में जैसे किसी ने स्याही पोत दी। उनकी दोनों आँखें गढ़ों में धंस गईं। उन्होंने कहा— "जाने दो, उसके बारे में और कुछ भी सुनना नहीं चाहता। तुम मेरी हालत जानते, तो बार-बार यही बात मेरे आगे न चलाते। सलाह-परामर्श करके मेरी इस समस्या का समाधान नहीं होगा।"

मि० अटर्सन ने यथा संभव विनय प्रकट करके कहा—"जेकिल, तुम मुझे जानते हो, मुझ पर विश्वास करो—खोलकर सब कहो—मुझे अच्छी तरह विश्वास है कि मैं तुमको इस विपत्ति से उबार सकता हूँ"

डा० ने उत्फुल्ल होकर कहा—"मित्र के योग्य बात ही तुमने कही है अटर्सन। दुनिया में अगर मैं किसी का भी विश्वास करता हूँ तो वह तुम हो। चाहे मैं कभी अपने ऊपर भी विश्वास खो दूँ, मगर तुम पर मेरा विश्वास अटल रहेगा। लेकिन तुम जो कुछ जानना चाहते

हो, वह मैं तुमसे नहीं कह सकूँगा। मगर हाँ, इतना तुमसे कहे देता हूँ कि जिस घड़ी मैं समझूँगा कि हाइड के बिना मेरा काम चलेगा, उसी घड़ी उसे छोड़ दूँगा—और तुम्हारे बिना भी मेरा कोई काम न होगा। अच्छा तो अब बात को छोड़ो।"

मि० अटर्सन उठ खड़े हुए। बोले—"तो शायद तुम्हीं ठीक हो।"

मि० जेकिल ने कहा—"ठहरो अटर्सन, और एक बात है। मेरा विश्वास करो, हाइड के साथ मेरा एक विशेष सम्बन्ध है। तुमने उसे देखा है—तुम जानते हो, वह कैसे उग्र स्वभाव का आदमी है। तो भी मैं तुमसे अनुरोध करता हूँ कि अगर किसी दिन मैं ग़ायब हो जाऊँ, तो उसे तुम मेरी सारी सम्पत्ति का स्वामी कर देना। तुम मेरे आगे प्रतिज्ञा करो कि तुम मेरा यह अनुरोध मानोगे।"

डा० जेकिल की आँखों में एक भिखारी की दीन दृष्टि उभर आई, चेहरे पर करुणा की प्रार्थना करने का भाव छा गया। एक लम्बी साँस छोड़कर मि० अटर्सन ने कहा—"प्रतिज्ञा करता हूँ।"

४

# हत्याकांड

उन्नीसवीं शताब्दी का एक और वर्ष बीत गया। वह था अक्तूबर का महीना। लंदन की छाती के ऊपर एक नृशंस हत्याकांड हो गया। मारे गये शहर के एक प्रसिद्ध आदमी सर डन्वर्स कैरो। सारे शहर में हलचल मच गई।

टेम्स नदी के किनारे एक मकान की दासी इस घटना का प्रत्यक्षदर्शी गवाह थी। उस दिन सरे शाम कुहरा गिर रहा था, किन्तु रात्रि को आकाश साफ़ था—बादल का नाम न था। परिचारिका अर्थात् दासी के घर की खिड़की जिस रास्ते की तरफ़ है, वह रास्ता चाँदनी से प्रकाश-पूर्ण हो रहा था। रात को ग्यारह बजे के समय वह दासी ऊपर के कमरे में सोने आई। खिड़की के भीतर से रास्ते का सुन्दर दृश्य देखकर उसके थके हुए मन को बड़ी तृप्ति मिली। उज्ज्वल चाँदनी से नहाई हुई सड़क चमक रही थी—वहाँ सन्नाटे का राज्य था। दासी खिड़की के पास कुछ देर बैठी रही। एक सौम्यमूर्त्ति वृद्ध उसी

राह से आ रहे थे। बाल सब उनके सफेद थे। मुखपर कुलीनता, शालीनता और बड़प्पन की छाप थी। चन्द्रमा के प्रकाश में उनका चेहरा स्पष्ट दिखाई पड़ रहा था।

दूसरी ओर से आ रहा था एक ठिंगने क़द का आदमी। उसका चेहरा और साज़-पोशाक ऐसा था जो किसी को नज़र को अपनी ओर नहीं खींचता। जब यह दूसरा आदमी उस वृद्ध के बिल्कुल पास आ गया, तब वृद्ध ने विनय के साथ उसे अभिवादन किया। इस विनय प्रकट करने का ऐसा कोई कारण नहीं है, ऐसा जान पड़ा। शायद यह वृद्ध का भद्रजनोचित व्यवहार ही था। दासी को जान पड़ा, जैसे वृद्ध ने उस आदमी से रास्ते के बारे में कुछ पूछा।

दोनों जने दासी की नज़र के बहुत ही पास थे। उसने दोनों जनों को बहुत अच्छी तरह देख पाया। ठिगना आदमी और कोई नहीं, मि० हाइड थे।

दासी हाइड को पहचानती थी। उसने और भी एक बार हाइड को अपने मालिक के पास आते देखा था। तभी से मन में वह हाइड के प्रति एक वितृष्णा या नफ़रत का भाव रखे हुए थी। हाइड के ऊपर उसे अरुचि सी हो गई थी।

हाइड के हाथ में एक भारी मोटे बेंत की लाठी-सी

थी। जबतक वह वृद्ध बोलते रहे तब तक तो हाइड किसी तरह सुनता रहा—जैसे उसके लिए धैर्य रखना कठिन हो रहा था, ऐसा जान पड़ा—किन्तु वृद्ध के चुप होते ही हाइड जैसे क्रोध से जल उठा; वह अपने हाथ की लाठी से वृद्ध के सिर पर बार-बार ज़ोर से प्रहार करने लगा। एकाएक लाठी खाकर वृद्ध अकचकाकर एक पग पीछे हट गये। लेकिन नरपिशाच हाइड ने मार-मारकर उन्हें धरती में सुलाकर ही दम लिया। इसके बाद उन्हें पैरों से कुचलने लगा। जिस तरह लोग मैदा माड़ते हैं, उसी तरह वह उनके अचेत शरीर को रौंदने लगा। उनकी हड्डियाँ तक चूर चूर हो गईं और शरीर मांस का लोथड़ा बन गया। दासी से और देखा नहीं गया, वह वहीं बेहोश होकर गिर पड़ी।

उसे जब होश आया, उस समय रात के दो बजे थे। सब घटना उसे याद आ गई। हत्यारा इसके पहले ही गायब हो चुका था। केवल अपनी अमानुषिकता का चिह्न छोड़ गया था। मांसपिण्ड की शकल में सड़क के बीच उस वृद्ध पुरुष की प्राणहीन देह पड़ी हुई थी।

दासी ने उसी समय फ़ोन से पुलीस को सूचना दी। मौक़े पर एक टूटी हुई लाठी का टुकड़ा और एक लिफाफे में बन्द चिट्ठी पाई गई। लिफाफे के सिर-

नामें में मि० अटर्सन का नाम लिखा हुआ था। वह चिट्ठी शायद वह वृद्ध पोस्टआफ़िस में छोड़ने के लिए जा रहे थे।

दूसरे दिन सबेरे बिस्तर से उठने के पहले ही मि० अटर्सन के पास वह चिट्ठी पहुँच गई। उन्होंने उस चिट्ठी को खोला नहीं। लेटे-लेटे ही सारा क़िस्सा सुनकर वह हड़बड़ा कर उठ बैठे। बोले—"पहले मैं उस लाश को देखूंगा—पाँच मिनट में ही तैयार हुए लेता हूँ।"

किसी तरह प्रातःकाल का कलेवा समाप्त करके वह खुद ही गाड़ी हाँककर पुलीस के थाने को चले। लाश उस समय भी वहाँ मौजूद थी। उस लाश को एक नज़र देखते ही उन्होंने सिर हिलाकर कहा—"कैसा गजब है! यह तो हैं सर डन्वर्स कैरो।"

पुलिस-आफ़िसर की आँखें आश्चर्य से फैल गईं। उन्होंने कहा—"यह भी क्या संभव है!"

लेकिन दम भर में ही उनके चेहरे का भाव बदल गया। सफलता की तृप्ति से वह पुलकित हो उठे। इतने सहज में लाश की शिनाख्त हो गई, हत्याकारी का नाम मालूम हो गया और प्रत्यक्षदर्शी गवाह भी मौजूद है। सारा श्रेय और नामवरी उन्हीं के हिस्से में है—उन्हीं को मिलेगी।

उन्होंने उच्छ्वसित होकर मि० अटर्सन को परिचारिका के बयान के माफ़िक़ सारी घटना आदि से अन्त तक सुना दी। लाठी का वह टुकड़ा भी दिखाया, जिससे हत्या की गई थी।

मि० अटर्सन मन-ही-मन हाइड का ही नाम सोच रहे थे। लेकिन टूटी लाठी देखकर उनकी सारी दुबधा जाती रही—इसमें कोई सन्देह नहीं रहा कि यह करतूत हाइड की ही है। यह लाठी उन्होंने बहुत दिन पहले डा० जेकिल को भेंट की थी। तब अवश्य यह टूटी नहीं थी।

उन्होंने पूछा—"अच्छा, यह हाइड क्या नाटे क़द का आदमी है?"

आफ़िसर ने कहा—"उस दासी की बात सुनकर मालूम हुआ कि वह ठिंगना तो है ही, देखने में भी बदमाश-सा है।"

मि० अटर्सन ने धीरे-धीरे कहा—"मेरे साथ मेरी गाड़ी पर चलिए। मैं आपको उसके घर लिये चलता हूँ।"

"अभी" कह कर पुलीस-आफ़िसर उठ खड़े हुए।

गाड़ी "सोहो" के पते पर दौड़ चली। उस साल उन दिनों पहले पहल कुहरा पड़ रहा था। घने कुहरे को

चीरती हुई गाड़ी आगे बढ़ चली। जहाँ पहुँचना था उस स्थान के पास आते ही आकाश थोड़ा साफ़ हो गया। उस अवकाश में देखा गया कि वे लोग एक गन्दे रास्ते में आ पहुँचे हैं। रास्ते के दोनों ही तरफ़ बस्ती है। अनेक प्रकार के नर-नारी चाय पीकर नींद की ख़ुमारी दूर करने जा रहे हैं। दरवाजों पर रूखे चेहरे के छोटे बालक-बालिकाओं की भीड़ जमा है। ऐसे ही स्थान में डा० जेकिल के ढाई लाख पौण्ड के उत्तराधिकारी और उनके प्रिय मित्र हाइड का निवासस्थान है।

एक घर के सामने आकर गाड़ी रुकी। मि० अट-र्सन ने इन्स्पेक्टर साहब को इशारा किया। उनके इशारा करते ही इन्स्पेक्टर ने गाड़ी से उतर कर दरवाज़ा खटखटाया। दरवाज़ा आकर खोला एक बूढ़ी औरत ने। इन्स्पेक्टर ने उसे सिरसे पैर तक अच्छी तरह देख लिया। चेहरा देखकर वह भली औरत नहीं जान पड़ी। लेकिन वह भली औरत बनने की चेष्टा कर रही है, यह उसके अमायिक व्यवहार से समझ पड़ा।

पुलीस-इन्स्पेक्टर के प्रथम प्रश्न के उत्तर में उसने बहुत नम्रता के साथ कहा—"हाँ, मिस्टर हाइड का ही यह मकान है; लेकिन वह तो इस समय घर में नहीं हैं। कल बहुत रात गये लौटे थे। और आज फिर बहुत

तड़के ही कहीं निकल गये हैं--अभी एक घंटा नहीं हुआ उनको गये। उनके लिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। उनका स्वभाव ही ऐसा है। अक्सर घर को नहीं लौटते। यही देखिए न, गत दो महीने के भीतर सिर्फ़ कल ही वह घर में थे।"

"इससे कुछ आता-जाता नहीं। हम केवल उनके कमरों की एक जाँच करेंगे।"—मि० अटर्सन ने कहा।

बुढ़िया ने कहा—"कुछ ख़याल न कीजिएगा, उन का ऐसा हुक्म हम को नहीं है।"

मि० अटर्सन ने कहा—तो मुझे स्पष्ट बता देना चाहिए कि यह हैं इन्स्पेक्टर न्यूकामेन—"स्काटलैंड-यार्ड से आ रहे हैं।"

मि० अटर्सन की बात सुनकर क्षण भर के लिए उस बूढ़ी के चेहरे और आँखों से प्रसन्नता का भाव फूट पड़ा। किन्तु उसी दम उसने अपने को सँभाल लिया। दोनों आँखें फाड़कर प्रश्न किया—"उन पर क्या कोई विपत्ति आई है? उन्होंने क्या किया है?"

मि० अटर्सन और इन्स्पेक्टर ने परस्पर एक दूसरे के मुँह की ओर देखा। इन्स्पेक्टर ने कहा—"उनका स्वभाव-चरित्र हम लोगों को बहुत अच्छा नहीं जान पड़ता। अब चलो, ज़रा उनके सब कमरे हमें दिखा दो।"

उस बूढ़ी औरत के सिवा उस सारे घर में और कोई दूसरा प्राणी नहीं देख पड़ा। हाइड स्वयं सिर्फ़ दो कमरों का इस्तेमाल करता था। ये दोनों कमरे खूब सजे हुए थे। उनमें जो कुछ सामान था, वह सभी क़ीमती था। दीवार में एक तसवीर टँगी हुई थी। यह तसवीर जान पड़ता है, उसके मित्र जेकिल ने भेंट की होगी; क्योंकि इस तरह के चित्र डाक्टर जेकिल खूब पसंद करते थे।

दोनों कमरों की जाँच की गई। दोनों ही कमरों का सामान बिखरा पड़ा था। मालिक जैसे विदेश को जा रहा है, थोड़ी ही देर में उसे ट्रेन पकड़नी होगी, इस तरह उतावली में वह यहाँ से गया है। कोट-पतलून वग़ैरह का फ़र्श के ऊपर ढेर लगा हुआ है। उनकी जेबें उलटी हुई बाहर निकली हैं। मेज की दराज़ें खोली गई थीं; लेकिन बंद नहीं की गईं। कमरे में जहाँ पर आग जलाई जाती है (उसे गरम रखने के लिए), वहाँ पर कुछ कागज़-पत्र जलाये गये हैं, जिनकी राख वहाँ पड़ी है। उस कागज़ों की राख के भीतर से इन्स्पेक्टर साहब ने एक चेक-बुक का अधजला हिस्सा खींचकर बाहर निकाला। यही एक ऐसा कागज़ था, जो समूचा अग्निदेव के पेट में नहीं गया था। दरवाज़े के पीछे से निकला उसी टूटी लाठी का दूसरा टुकड़ा। पुलीस-इन्स्पेक्टर को जो कुछ सन्देह मिटने को बाक़ी रह गया था,

उसे इस टुकड़े ने मिटा दिया। उनका मन भीतर के आनंद से नाच उठा। स्वस्ति की साँस छोड़कर वह दल-बल के साथ बैंक में हाइड की ख़बर लेने चले। वहाँ देखा गया, हाइड के नाम से एक मोटी रकम जमा है।

पुलीस-इन्स्पेक्टर निश्चिन्त हुए। ज़ोर गले से बोले—"चिड़िया उड़ जाने पर भी वह मेरी मुट्ठी में है। इस आदमी का दिमाग़ निहायत ही ख़राब हो गया था; नहीं तो वह लाठी का दूसरा टुकड़ा यहाँ न डाल जाता; चेकबुक भी न जला डालता। रुपए के बिना आदमी का काम नहीं चलता। रुपया उसे बैंक से निकालना ही होगा और बैंक में भी उसे आना पड़ेगा। मैं यहीं से उसे गिरफ़्तार करूँगा।"

लेकिन पुलीस-साहब ने जितने सहज में काम पूरा होने की आशा की थी, वह सही न निकली। काम के समय उनका मंसूबा पूरा न हुआ। मि० हाइड को पहचानने वाले लोग बहुत ही कम थे। यहाँ तक कि जो दासी उसे पहचान पाई थी, उसके मालिक के पास हाइड जीवन में केवल दो बार आया था। उसके अपने परिवार का पता कोई नहीं जानता। सबसे बड़ी समस्या यह हुई कि जिन लोगों ने उसे देखा था, वे सभी, एक दुसरे से भिन्न, उसके चेहरे का जुदा-जुदा वर्णन करने लगे। हाँ, यह बात सभी ने कही कि उसकी देह में कहीं-न-कहीं थोड़ा-सा दोष अवश्य है।

५

# डा० जेकिल की चिट्ठी

कई दिन बाद, एक दिन तीसरे पहर मि० अटर्सन डाक्टर जेकिल के घर जाकर हाज़िर हुए। पूल उन्हें घर के भीतर ले गया। यह घर डा० जेकिल ने ख़रीदा है। इस घर के पहले जो मालिक थे, वह भी एक डाक्टर थे। वह जब इस दुनिया से कूच कर गये, तब उनके उत्तराधिकारियों ने घर को बेच डाला।

डा० जेकिल ने मकान ख़रीदकर उसे अपने मन माफ़िक उसका रूप बदल दिया है। अब उसका रूप कुछ अद्भुत हो गया है। पहले जहाँ पर बाग़ था, वहाँ अब एक तरह से मैदान रह गया है। यह मैदान पार करने पर एक बड़ा 'हाल' मिलता है। पहले डाक्टर का यह 'हाल' कितने ही उत्साही छात्रों के कल-रव से गूँजा करता था। अब उसमें दिन-रात सन्नाटा छाया रहता है। अब यहाँ पर बड़े-बड़े टेबिल हैं। वे डाक्टरी के औज़ारों से तथा अन्य सामान से भरे पड़े हैं। हाल का फ़र्स पैकिंग-बक्सों के खर-पतवार और

कागज़ की कतरनों से गंदा हो रहा है। हाल पार होने पर उसके आख़ीरी हिस्से में एक सीढ़ी ऊपर चढ़ने के लिए देख पड़ती है। सीढ़ी ऊपर जाकर एक कमरे के दर्वाज़े के सामने ख़तम होती है। दर्वाज़े पर एक बनात का पर्दा पड़ा है। इसी दर्वाज़े से डाक्टर जेकिल के बैठने के कमरे में जाना होता है।

पूल इसी दर्वाज़े से मि० अटर्सन को ले गया। डा० जेकिल कमरे में ही थे। कमरा बहुत बड़ा है। एक बढ़िया सेक्रेटेरियट-टेबिल और कुछ-कुछ असबाब-पत्र उसमें हैं। चारों ओर दीवार में बड़े-बड़े कई आईने लगे हैं। भीतर एक बत्ती जल रही है। आग के पास डा० जेकिल बैठे हैं। वह इतने कमज़ोर और दुबले हो रहे हैं कि पहचाने ही नहीं जाते। अस्वस्थता के चिह्न उनके शरीर में मौजूद हैं। मित्र को देखकर वह उठे नहीं, केवल कमज़ोर और दुर्बल हाथ बढ़ाकर क्षीण स्वर से उन्हें अभिवादन किया। डाक्टर के गले का स्वर भी कुछ बदल गया है।

पूल के चले जाने पर मि० अटर्सन ने कहा—"ख़बर तो शायद तुमने सुनी होगी?"

डाक्टर ने गर्दन हिलाते हुए कहा—"अख़बारों के बेचनेवाले चिल्ला रहे थे—भोजन के कमरे से सुनाई दे रहा था।"

मि० अटर्सन ने कहा—"सिर्फ़ एक बात मैं कहने आया हूँ। सर कैरो मेरे मवक्किल थे। एक हिसाब से मेरे लिए जो तुम हो, वही वह भी। तुम्हारे किसी मामले-मुक़दमे में मैं जैसा उत्साह दिखाता रहा हूँ, इस मुक़दमे में भी वही करना मेरा कर्त्तव्य है। इसी से, अगर तुम पागल नहीं हो गये तो उसे अब छिपाये रखने की चेष्टा न करो।"

डाक्टर जेकिल ने यथासंभव ज़ोर गले से कहा—"अटर्सन, भगवान् के नाम की क़सम खाकर कहता हूँ, उससे अब मेरी भेंट नहीं होगी। इस दुनिया में उसके साथ मेरा सब संबंध और सम्पर्क जाता रहा। और, अब वह मेरी सहायता की प्रत्याशा भी नहीं करता। उसे मैं जितना जानता हूँ, निश्चय ही तुम उतना नहीं जानते। जान भी नहीं सकते। वह निरापद है—बिल्कुल ख़तरे के बाहर है। उसका नाम अब न सुन पड़ेगा—उसे कोई अब देख भी न पावेगा।"

मि० अटर्सन गंभीर भाव से मित्र की बात सुनते रहे। अपने मित्र का यह उत्तेजित भाव उन्हें बिल्कुल ही अच्छा नहीं लगा। उन्होंने कहा—"जान पड़ता है, तुम उसके बारे में बिल्कुल निश्चिन्त हो। भगवान् करें, तुम्हारी ही बात सच हो। तुम्हारे भले के लिए मैं आशा करता हूँ, तुम्हारी बात ही ठीक हो। कारण, उसे अगर अदालत तक

खींच ले जाया गया, तो उसके साथ तुम्हारा नाम भी लपेट में आ जायगा।"

डाक्टर जेकिल ने उत्तर दिया—"उसके संबंध में मेरी धारणा बिल्कुल ठीक है। लेकिन तुम्हारे साथ मुझे एक सलाह करनी है। मैंने आज—आज मैंने उसके पास से एक चिट्ठी पाई है। मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि वह चिट्ठी पुलीस के हाथ में दूँ कि नहीं। मेरी अक्ल कुछ काम नहीं कर रही है। तुम बुद्धिमान और आईन-क़ानून के पण्डित हो, तुम पर मुझे विश्वास भी है। तुमको मैं वह चिट्ठी देता हूँ। जो अच्छा समझो, वही करो।"

मि० अटर्सन ने कहा—"तुम्हें भय हो रहा है कि कहीं इस चिट्ठी का सूत्र पकड़कर हाइड पकड़ न लिया जाय—क्यों?"

जेकिल ने कहा—"ना, मुझे यह डर बिल्कुल नहीं है। हाइड के भाग्य में चाहे जो कुछ हो, उसकी चिन्ता मुझे नहीं है—उससे मेरा कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। मेरे साथ उसका सब संबंध समाप्त हो गया है। अब मैं अपने ही बारे में सोच रहा हूँ।"

जेकिल के मुँह से यह बात सुनकर मि० अटर्सन को संतोष हुआ, उन्होंने चैन की साँस ली। उन्होंने कहा—"देखूँ वह चिट्ठी।"

चिट्ठी की लिखावट टेढ़ी-मेढ़ी थी—जैसे बाएँ हाथ से लिखी गई हो। नीचे दस्तख़त थे—"एडवर्ड हाइड"। थोड़े ही शब्दों में चिट्ठी समाप्त कर दी गई थी, लेकिन सभी वक्तव्य स्पष्ट था।

हाइड ने लिखा था अपने मित्र डा० जेकिल को —जिनके निकट वह कृतज्ञता के पाश में बँधा हुआ है— कि वह उसे आपत्ति से बचाने के लिए दिमाग़ लड़ाकर उसके ऋण का बोझ और न बढ़ावें। अपने को छिपा रखने का यथेष्ट उपाय उसके पास है। वह मित्र को इस झंझट में फँसाना नहीं चाहता।

चिट्ठी देखकर हाइड के बारे में अबतक मि० अटर्सन की जो धारणा थी, वह बदल गई। यह चिट्ठी तो मित्रभाव का ही परिचय देती है। उन्होंने पूछा—"इसका लिफाफा क्या हुआ?"

जेकिल ने उत्तर दिया—"मैंने जला डाला। उस समय यह ठीक समझ में नहीं आया कि यह ग़लती होगी। मैंने अच्छी तरह देखा है, उस पर किसी डाकख़ाने की मोहर नहीं थी। यह चिट्ठी दस्ती आई है।"

"मैं क्या इस चिट्ठी को दबा डालूँ?"—मि० अटर्सन ने पूछा।

"यह सर्वथा तुम्हारे ऊपर ही निर्भर है, जो चाहो

करो। मैं अपने ऊपर विश्वास खो चुका हूँ।"—जेकिल ने कहा।

मि० अटर्सन बोले—"अच्छा, क्या करना चाहिए, इसे मैं अच्छी तरह सोचकर तय करूँगा। अच्छा यह बताओ कि तुम्हारे वसीयतनामे में जो यह बात लिखी है कि तुम्हारे कभी एकाएक ग़ायब हो जाने पर हाइड को ही तुम्हारी सम्पत्ति मिलेगी, यह शर्त क्या हाइड ने ही तुमसे ज़बर्दस्ती लिखा ली थी?"

किसी ने जैसे डा० जेकिल के शरीर का सारा रक्त निचोड़ लिया। उन्होंने दाँत से दाँत ज़ोर से दबाकर सम्मति-सूचक सिर हिलाया।

मि० अटर्सन ने कहा—"यह मैं पहले ही जानता था। वह तो तुम्हारी हत्या ही कर डालता जायदाद के लोभ से। कहना चाहिए, तुम खूब बच गये।"

"उससे भी बढ़कर मुझे नसीहत हो गई है—हाय भगवान्! मुझे खूब नसीहत हुई...."—कहकर उन्होंने दोनों हाथों से अपना चेहरा ढक लिया।

मि० अटर्सन उठकर धीरे-धीरे कमरे से बाहर निकल आये। बाहर जाते समय राह में पूल से उनकी भेंट हो गई। मि० अटर्सन ने बातों-बातों में उससे पूछा—"जो आदमी आज एक चिट्ठी लेकर आया था, उसकी सूरत-

शकल देखने में कैसी है ?"

पूल ने विस्मय प्रकट करके कहा—"चिट्ठी लेकर तो आज कोई नहीं आया साहब—जो कुछ चिट्ठियाँ आई हैं, सब डाक से आई हैं।

इस ख़बर ने मि० अटर्सन को फिर नये सिरे से चिन्ता में डाल दिया। उन्होंने अपने मन में कहा—तो यह चिट्ठी डाक्टर के कमरे में ही बैठकर लिखी गई है क्या !

सड़क पर आकर मि० अटर्सन ने अख़बार बेचने वाले छोकरों की आवाज़ें सुनीं। वे पुकार-पुकार कर ख़रीदारों को मुख़ातिब कर रहे थे। सर कैरों के हत्या- कांड की ख़बर सुनाकर राह-घाट में विस्मय की सृष्टि कर रहे थे।

मि० अटर्सनने मन में कहा—"पार्लियामेंट के मेंम्बर, उनके मित्र और मवक्किल सर डल्वर्स कैरो के सम्बन्ध में यही आख़री समाचार है। भाग्य का कैसा निष्ठुर परिहास है यह !"

घर लौटकर मि० अटर्सन आग की अँगीठी के पास जा बैठे। दूसरी तरफ़ उनके हेड क्लर्क मि० गेस्ट बैठे थे। कर्मचारी होने पर भी मि० गेस्ट उनका दाहना हाथ थे। उनकी कोई भी गुप्त बात इस क्लर्क से छिपी न थी। अनेक बार अनेक बड़े मसलों में गेस्ट की सलाहा ने मि० अटर्सन की बड़ी सहायता की है।

मि० गेस्ट पूल को जानते थे और यह ख़बर भी रखते थे कि हाइड के साथ डा० जेकिल की मित्रता घनिष्ठ हो उठी है।

मि० अटर्सन ने पहले बात शुरू की। कहा— "यह सर कैरो की हत्यावाली घटना बहुत ही मर्म भेदी है!"

गेस्ट ने जवाब दिया—"हाँ सर, इसमें कोई संदेह नहीं। सर्वसाधारण में भी बड़ी हलचल मची हुई देख पड़ती है। आदमी पागल हुए बिना कहीं ऐसा कुकर्म कर सकता है?"

मि० अटर्सन ने कहा—"अच्छा, इस हत्याकांड के बारे में तुम्हारी धारणा क्या है, मुझे बताओ तो? उस हत्यारे के हाथ का लिखा एक छोटा-सा काग़ज़ का टुकड़ा मुझे मिल गया है। बात मैंने अभी तक गुप्त रखी है—मगर बाद को भी मैं उस काग़ज़ को लेकर क्या करूँगा, कुछ समझ से नहीं आ रहा है।"

मि० गेस्ट की दोनों आँखें चमक उठीं। बड़े ग़ौर के साथ उस चिट्ठी की लिखावट को देखकर—जाँच कर उन्होंने कहा—पागल नहीं है वह। यह बाएँ हाथ से लिखा गया है।"

मि० अटर्सन ने कहा—"हाँ, यह लिखावट बहुत ख़राब है।"

उनकी बात पूरी होने के साथ ही एक नौकर ने भीतर आने की अनुमति माँगी। वह एक छोटी-सी चिट्ठी लेकर आया था।

मि० गेस्ट ने उत्सुक होकर पूछा—"डा० जेकिल की लिखी है न यह चिट्ठी? उनकी लिखावट को मैं पहचानता हूँ। इसमें क्या कुछ गुप्त बात है सर?"

मि० अटर्सन ने कहा—"ना, गोपनीय कुछ भी नहीं है—मुझे निमन्त्रण दिया है। क्या तुम चिट्ठी देखोगे?"

अटर्सन ने चिट्ठी गेस्ट की तरफ बढ़ा दी।

मि० गेस्ट दोनों चिट्ठियों को पास-पास रखकर जांच कर बोले—"बड़े मजे की बात है सर। दो तरह से लिखे जाने पर भी, दोनों लिखावटें एक ही हाथ की मालूम पड़ रही हैं।"

मि० अटर्सन गम्भीर हो गये।

मि० गेस्ट के विदा हो जाने पर उन्होंने दोनों चिट्ठियाँ उठाकर सन्दूक में बन्द कर दीं। रहस्य उनके निकट और भी घना हो उठा। एक हत्याकारी की लिखावट का जाल जेकिल ने क्यों किया?

उनकी सारी देह ठंडी पड़ गई!

६

# विचित्र पत्र

इसके बाद अनेक दिन बीत गये। सर कैरो के हत्यारे का कहीं कुछ पता न चला। पुलीस की तरफ़ से हज़ारों पौंड के इनाम की घोषणा की गई। स्काटलैंड-यार्ड संसार के श्रेष्ठ जासूसों का अड्डा है। वहाँ का सुदक्ष जासूस-दल भी मात खा गया। जासूसों ने पता लगाने में कोइ कसर नहीं उठा रखी—लेकिन हाइड कहाँ? वह जैसे एकाएक धरती में समा गया या आसमान में उड़ गया! उसका घर-द्वार पड़ा रह गया—उसका प्रिय मित्र डा० जेकिल भी छूट गया।

हाइड के अतीत जीवन का सब वृत्तान्त पुलीस ने खोज निकाला। वह शैतान की प्रतिमूर्त्ति था। उसकी बदनामी, उसके निष्ठुर कार्य-कलाप—उसके गत जीवन की सभी बातें पुलीस के कानों तक पहुँच गईं, केवल इस रहस्य की गाँठ न खुली कि वर्तमान में वह कहाँ है। इस बारे में कोई उड़ती ख़बर भी न आई। जैसे हाइड

नाम का कोई व्यक्ति पृथ्वी पर था ही नहीं। एक शैतान कुछ दिनों के लिए नरक से उठकर, हाइड का नाम रखकर, लंदन शहर की छाती के ऊपर ताण्डवनृत्य करता घूम गया—और छोड़ गया अपनी कई एक ख़ूनी विभीषिकाओं की छाप, जिसके कारण पृथ्वी पर का यह इतना बड़ा शहर आतंक से बार-बार काँप उठा।

पृथ्वी अपनी दैनिक गति से घूमती जा रही है। दिन और रातें बारी-बारी से पृथ्वी की छाती के ऊपर ठीक पहले की ही तरह चक्कर लगाती आती-जाती हैं। साधारण जनता की स्मरणशक्ति बहुत ही कमज़ोर है। लोग हाइड की बात, सर डन्वर्स कैरो की हत्या की बात भूल गये। मि० अटर्सन भी बहुत कुछ प्रकृतिस्थ और स्वस्थ हो गये हैं। बीच-बीच में उन्हें अपने मुवक्किल सर कैरो का ख़याल आ जाता है। नर-पिशाच हाइड का भी ख़याल उन्हें कभी-कभी आ जाता है। सर कैरो मारे गये। अवश्य ही हाइड नाम का एक पापिष्ठ भी लापता हो गया। उनकी राय में समाज की क्षति अधिक हुई। हाइड के लापता होने से जो कुछ लाभ समाज को हुआ, उससे सर डन्वर्स कैरो जैसे व्यक्ति के निधन से होनेवाली क्षति की पूर्त्ति नहीं हो सकती।

ख़ैर कुछ भी हो, डा० जेकिल के सिर से भूत जो

उतर गया, यह भी कम आनन्द की बात नहीं है। अब डा० जेकिल एक नये ही आदमी हो गये हैं। इधर एक अर्से से वह अपने मिलने-जुलने वालों और मित्र मण्डली से अलग रहकर उदास निरानन्द जीवन व्यतीत कर रहे थे। उस जीवन की समाप्ति हो गई है। अब वह समाज में काफी मिलते-जुलते हैं—बन्धु-बान्धवों और इष्ट-मित्रों की दावतें करते हैं। नकली जेकिल की केचुल गिरकर असली जेकिल का रूप जैसे उनके सारे अंग में निकल आया है। उनका सोया हुआ आनंद फिर जाग पड़ा है।

लगभग दो महीने इसी तरह कटे। लेकिन जान पड़ता है, फिर डाक्टर जेकिल का दिमाग़ ख़राब हुआ। मि० अटर्सन दो दिन उनके घर जाकर लौट आये। जेकिल घर में थे, तो भी उन्होंने मुलाक़ात नहीं की। पूल मिला था। उसने कहा—आजकल वह किसी से भी मिलते-जुलते नहीं हैं। मि० अटर्सन ने और भी दो-एक बार मिलने की कोशिश की, लेकिन हर बार जवाब पाकर लौट आये।

डा० जेकिल से मुलाक़ात नहीं होती। अब मि० अटर्सन चले डा० लेनियन से मिलने। यहाँ तो कोई उन्हें लौटा न देगा—मिलने से इनकार न करेगा?

डा० लेनियन घर ही में थे। लेकिन उनको यह

क्या दशा हो गई है! मृत्यु-पथ के यात्री रोगी में और उनमें कोई अंतर नहीं रहा है। उनका लाल चेहरा पीला पड़ गया है। इन्हीं कुछ ही दिनों में जैसे उनकी उमर कई साल बढ़ गई है। सिर के सब बाल एकदम सफ़ेद हो गये हैं। चँदिया के बाल तो साफ़ ही हो गये हैं। जान पड़ता है, कोई भयानक आतंक या ख़ौफ़ ने उनके यन में जड़ जमा ली है और शरीर के भीतर की मशीन धीरे-धीरे बन्द होती आ रही है—जीवन शक्ति क्षण-क्षण क्षीण होती जा रही है।

मि० अटर्सन को बड़ा विस्मय हुआ। उन्होंने आश्चर्य के साथ कहा—"यह क्या चेहरा हो गया है तुम्हारा लेनियन?"

हताश स्वर में डा० लेनियन कह उठे—"अटर्सन, अब मैं नहीं बचूँगा।"

मि० अटर्सन अवाक् होकर उनकी ओर ताकते रहे।

डा० लेनियन का क्षीण स्वर काँप उठा। इसके बाद धीरे-धीरे बोले—"कुछ दिन पहले से एक ख़ौफ़ मुझ में समा गया है—उसी से मेरे शरीर की नसें टूटकर टुकड़े-टुकड़े हो गई हैं। मैं लेनियन डाक्टर हूँ? खूब समझ पा रहा हूँ कि अब मेरी ज़िंदगी के दिन इने-गिने रह गये हैं।"

मि० अटर्सन चुप रहे—क्या करते?

डा० लेनियन फिर धीरे-धीरे कहने लगे—"जीवन में भोग करने को बहुत कुछ है—सीखने की भी कोई सीमा नहीं है। मैंने जीवन को प्यार किया था—हाँ, जीवन को खूब ही चाहता था। जीवन का अधिकांश समय मैंने ज्ञान संचय करने में बिताया है—ज्ञान को बढ़ाता आया हूँ; लेकिन मुझे जानने को बहुत कुछ बाक़ी रह गया। ऐसा न होता तो मुझे मरने का अफ़सोस न होता—मरने में कष्ट न होता।"

मि० अटर्सन ने सहानुभूति के स्वर में कहा—"जेकिल भी अस्वस्थ है। उससे इधर तुम्हारी भेंट हुई है क्या?"

डा० लेनियन का पीला चेहरा और भी सफेद हो गया। उन्होंने हाथ उठाने की चेष्टा की। हाथ काँपने लगा। उसी दम उत्तेजित होकर वह कह उठे—"जेकिल! जेकिल!! जेकिल!!! यह नाम अब मेरे आगे न लेना। वह मर गया। उसके साथ अब मेरा कोई लगाव नहीं है—कोई सम्बन्ध नहीं है। अगर पूछो, 'क्यों?' तो मैं इसका जवाब नहीं दूँगा। वह मर गया। उसके साथ मेरा सब सम्बन्ध...."

"होगा जाने दो"—कहकर अटर्सन ने उनको रोक दिया। कुछ देर चुप रहकर उन्होंने पूछा—"मैं क्या इसका कुछ उपाय कर सकता हूँ?"

डा० लेनियन ने कहा—"अपने को धोखा न दो अटर्सन। अपने ही से यह पूछकर देखो। तुम्हारा मन कह

देगा कि तुम उस (जेकिल) का भला या बुरा कुछ नहीं कर सकते।"

मि० अटर्सन ने व्यथित स्वर में कहा—"वह तो मुझ से मिलता ही नहीं डाक्टर?"

"इससे कम-से-कम मुझको आश्चर्य नहीं है। इस दुनिया से मेरे विदा होने में अब अधिक देर नहीं है। उसके बाद तुमको शायद सब कुछ मालूम हो जायगा। किन्तु इस समय तुम मेरे मुँह से इस बारे में एक भी शब्द नहीं सुन पाओगे। तुम मेरे बहुत दिनों के मित्र हो। मेरे पास आये हो, बहुत अच्छी बात है, बैठो। और सब बातें करो। मगर अगर तुम जेकिल की बात करना चाहते हो, तो मैं दिल से कहता हूँ, तुम जाओ। यह सब मैं सह नहीं सकूँगा—सह न सकूँगा।"—लेनियन ने कहा।

फिर उन्होंने तकिये में मुँह छिपा लिया।

घर लौटकर मि० अटर्सन का पहला काम हुआ डा० जेकिल को एक कड़ी चिट्ठी लिखना। उन्होंने चिट्ठी में यह जानना चाहा कि "उनके यों मुँह छिपाने का—किसी से न मिलने-जुलने का—कारण क्या है? और उन्होंने लेनियन जैसे मित्र के प्रेम-बंधन के ऊपर ऐसी निष्ठुर चोट ही क्यों की है, जिसके कारण दोनों की परस्पर घनिष्ठता समाप्त हो गई?"

दूसरे दिन इसका एक लम्बा जवाब आया। चिट्ठी लम्बी थी, लेकिन उसके हरएक शब्द में असीम वेदना भरी थी। उसका सारांश यह था—"लेनियन के साथ उनका झगड़ा किसी दिन नहीं मिटेगा। लेकिन इसके लिए लेनियन को दोषी ठहराना सत्य की हत्या करना होगा। हाँ, इस बारे में डा० जेकिल की भी यही राय है कि दोनों जनों की अब किसी दिन भेंट-मुलाक़ात नहीं होगी।" यह तो हुई लेनियन की बात। अपने सम्बन्ध में जेकिल ने लिखा है कि अब से वह लोगों को नहीं दिखाई देगा—उनकी आँखों से ओझल होकर रहेगा। यहाँ तक कि मि० अटर्सन भी उसे न देख पावेंगे। लेकिन इसके यह माने नहीं कि वह परस्पर की मित्रता के ऊपर संदेह करें—ऐसी बात वह कभी अपने मन में भी न लावें; यह अनुरोध भी उस चिट्ठी में किया गया था। और एक अनुरोध भी उसमें था। उससे जान पड़ा कि वह अपने किये कर्म का प्रायश्चित कर रहा है। वह असल में एक करुण स्वीकारोक्ति थी—कबूल करना था। वह दूसरा अनुरोध यह था कि "मि० अटर्सन उसके इस अपनी इच्छा से ग्रहण किये हुए निर्वासित जीवन की कुछ इज़्ज़ात करें—हो-हल्ला मचाकर उसकी शान्ति को नष्ट न करें।"

एक के बाद एक नई परिस्थिति सामने आ रही थी। सारी

गड़बड़ डा० जेकिल को लेकर थी। हाइड का भूत उनके सिर पर से उतर गया है। एक सप्ताह पहले भी उनके चेहरे पर हँसी-खुशी का भाव और मन में शान्ति थी। और आज! आज उनके मन की दशा यह है कि वह मित्र की सहायता भी नहीं चाहते! लेनियन को क्या हुआ और उसकी इस करुण निराश दशा का जेकिल से क्या संबंध है, यह तो रहस्य ही बना रहा—नामी गरामी वकील मि० अटर्सन की परिमाजित मस्तिष्क ने भी इस गुत्थी को नहीं सुलझा पाया।

एक सप्ताह बाद लेनियन की हालत और भी ख़राब हो गई। एक पखवारे में ही वह मर गये। उनकी अंत्येष्टि क्रिया (दफ़नाने) के दिन रात को मि० अटर्सन ने शोक-संतप्त मन से अपने आफ़िस-रूम में घुसकर भीतर से दर्वाज़ा बंद कर लिया। एक मोहरबंद बड़ा लिफाफा आलमारी के भीतर से खींचकर निकाला। उसके ऊपर स्पष्ट करके उनके मृत मित्र लेनियन के हाथ का लिखा था—"प्राइवेट—मि० जे० जी० अटर्सन।" एक तरफ़ कोने में यह हिदायत लिखी थी—"दूसरा कोई इसे न खोले, न पढ़े। अगर चिट्ठी पहुँचने के पहले ही उस आदमी की मृत्यु हो जाय, जिसका नाम सिरनामे में लिखा है तो यह चिट्ठी नष्ट कर दी जाय।"

ऐसी हिदायत जब ऊपर लिखी है, तब निश्चय ही इस चिट्ठी में कोई गुप्त बात लिखी होगी। उसे खोलने में मि० अटर्सन को एक तरह का न जाने कैसा डर मालूम होने लगा। कई घंटे पहले वह एक प्रिय मित्र को चिर-निद्रा में सुलाकर आये हैं। न जाने अब इस चिट्ठी में और किस नई विपत्ति की सूचना मिलेगी। तो भी उनको उस पर की सील-मोहर तोड़नी पड़ी—चिट्ठी भी खोलनी पड़ी। मित्र की इज़्ज़त तो उन्हें करनी ही होगी।

लिफाफा खोलने पर देखा गया, उसके भीतर भी एक और लिफाफा है। वह भी ऊपरवाले की तरह मोहर लगा हुआ और बंद किया हुआ है। उसके ऊपर भी उसी तरह लिखा हुआ है कि "डाक्टर जेकिल की मृत्यु या उनके लापता होने के पहले खोलना मना है।"

मि० अटर्सन अपनी ही आँखों पर विश्वास न कर सके। फिर पढ़ा—हाँ, यही तो लिखा है—जैसा कि उस प्रलाप से भरे ऊलजलूल वसीयतनामे में लिखा था। खैर वसीयत में वे सब बातें लिखने का एक कारण था। उसे हाइड ने अपने स्वार्थ साधन के लिए जेकिल से लिखाया था। किन्तु इसमें फिर वही लापता होने का उल्लेख क्यों है? मि० अटर्सन अब अपने को रोक नहीं पा रहे थे। यह लिफाफा खोलते ही तो सब रहस्य खुल जायगा। वह

लिफाफा खोलने के लिए उनके हाथ छटपटाने लगे। इधर अपनी ज़िम्मेदारी को समझनेवाले क़ानून-पेशा वकील वह हैं और दूसरी ओर उनके स्वर्गगत मित्र का अनुरोध है। उनका हाथ फिर उस लिफाफे को खोलने के लिए नहीं उठा। संदूक को गुप्त दराज में वह लिफाफा डालकर उन्होंने संदूक बन्द कर दिया।

कौतूहल को चरितार्थ करना एक बात है और कौतूहल को दबाना दूसरी बात है। उन्होंने एक बड़े कौतूहल को उस समय दबा अवश्य लिया; किन्तु बीच-बीच में अपने मित्र डा० जेकिल के घर गये बिना उनसे नहीं रहा गया। मगर मित्र क दर्शन किसी दिन नहीं मिले। वह यही चाहते भी थे। जो मिलना नहीं चाहता, उससे भेंट न होना ही वांछनीय है। वह जाते थे दर्वाज़े पर खड़े होकर पूल से दो-चार बातें करने और हाल-चाल जानने के लिए। पूल से मित्र के रंग-ढंग के बारे में कुछ तथ्य संग्रह करके ही वह चले आते थे। अब डाक्टर जेकिल सब समय अपनी लेबोरेटरी में ही रहते हैं। यहाँ तक कि वहीं टेबिल के ऊपर ही सोते भी हैं। उनके मुँह से कोई एक शब्द भी नहीं सुन पाता। यही एक बात बार-बार सुनते-सुनते मि० अटर्सन ने पूल से मिलने जाना भी कम कर दिया।

७

# रहस्य-भेद की चेष्टा

उस दिन रविवार था। मि० अटर्सन और मि० एन्फ़ील्ड हमेशा की तरह घूमने चले। वे उसी पूर्वोक्त दुमंज़िले मकानवाली गली से जा रहे थे। एकाएक दोनों जने उस घर के द्वार के सामने आकर रुक गये।

मि० एन्फ़ील्ड ने कहा—"तो हाइड के नाटक का ड्रापसीन हो गया?"

मि० अटर्सन ने कहा—"खूब याद आया—तुमसे शायद मैंने नहीं कहा? तुम्हारी ही तरह मैंने भी हाइड-सम्बन्धी एक मामले की छानबीन की थी। उससे मुझे भी कम आतंक नहीं हुआ।"

मि० एन्फ़ील्ड ने कहा—"पापिष्ठ लोग क्या एक ही पाप करके रह जाते हैं? यह देखो, मैं भी एक मूर्ख हूँ। पहले नहीं समझ पाया था, इस दुमञ्जिले मकान के पीछे जो खुला मैदान है, यह डा० जेकिल के मकान का पिछ-वाड़ा है। बाद को मुझे इसका पता चला।"

मि० अटर्सन ने कहा—"ऐसी बात है ? तो चलो एक बार इस मैदान से जेकिल के घर के पीछे जो खिड़कियाँ हैं, उन्हें देख लिया जाय। सच तो यह है कि मुझे जेकिल-के लिए दुःख होता है।"

दोनों मित्रों ने मैदान में जाकर वहाँ से तीन खिड़किड़ाँ देख पाईं। बीच की खिड़की आधी खुली थी। ठीक उसी के किनारे जैसे कोई आदमी क़ैद-सी काट रहा हो। उसका चेहरा निराशा से भरा है। मि० अटर्सन ने वहीं, से पहचान लिया—वह डा० जेकिल थे।

मि० अटर्सन ने चिल्लाकर कहा—"क्यों मि० जेकिल, कैसे हो ? अच्छे तो हो ?"

खिड़की के भीतर से ही क्षीण स्वर में जवाब आया—"बहुत ही ख़राब है अटर्सन—शरीर बहुत ही ख़राब है। जान पड़ता है, बहुत दिन नहीं टिकेगा।"

"इतने घर में घुसे क्यों रहते हो ? बाहर निकल कर आओ। चलो-फिरो—शरीर में खून दौड़े—यही मेरी तरह-एन्फ़ील्ड की तरह। मि० एन्फ़ील्ड मेरे चचेरे भाई हैं, यह देखो मेरे साथ हैं। हम लोग घूमने निकले हैं। तुम भी हमारे साथ आओ। सिर्फ टोपी लेकर चल पड़ो"—चिल्लाकर एक साँस में मि० अटर्सन इतनी बातें कह गये।

एक लम्बी साँस छोड़ते-छोड़ते डा० जेकिल ने क्षीण

स्वर में कहा—"तुम लोग सच कहते हो, अच्छी बात कहते हो; मुझे जाने की इच्छा भी है। लेकिन—ना, ना, यह असंभव है। मेरी नीचे जाने को हिम्मत नहीं होती। मैं अगर तुम लोगों को ऊपर बुला सकता तो सचमुच ही मुझे बड़ा आनन्द होता। लेकिन वह भी तो मैं नहीं कर पा रहा हूँ। यह जगह ठीक तुम लोगों के लायक़ नहीं है।"

मि० अटर्सन ने कहा—"तो हम लोग यहीं खड़े-खड़े तुमसे दो बातें कर लें?"

डा० जेकिल ने ज़रा हँसकर कहा—"मैं भी तुम लोगों से यही कहने जा रहा था।"

डा० जेकिल की बात जैसे ही समाप्त हुई थी, चेहरे पर की हँसी अब भी ग़ायब नहीं हुई थी—इतने ही में खिड़की के पट झड़ाके से बन्द हो गये। बन्द होने के अवकाश में, खिड़की की फाँक से दोनों आदमियों ने जो देखा, उससे दोनो सन्नाटे में आ गये। वे आतंक और उत्तेजना से काँपने लगे। उनके माथे में पसीने की बूँदे निकल आईं। उन्होंने देखा, ऐसी एक भयानक मनुष्य की मूर्त्ति तेज़ी से आड़ में हो गई, जिसे जो कोई क्षण भर के लिए भी देखेगा तो उसके शरीर में खून का दौड़ना बन्द हो जायगा। एन्फ़ील्ड और अटर्सन की हालत भी लगभग ऐसी ही हो उठी। फ़ौरन ही उन्होंने वह जगह छोड़ दी।

दोनों के ही मुँह में बोल न था। मुँह से बात नहीं निकल रही थी, मुखमण्डल विवर्ण हो गया था, आँखों में आतंक समाया हुआ था। बड़ी सड़क पर आकर भी उनका यह भाव दूर नहीं हुआ।

इस घटना के कुछ दिन बाद, एक दिन मि० अटर्सन शाम का भोजन करके विश्राम कर रहे थे। उसी समय पूल ने उनसे मिलना चाहा। बेवक्त पूल को देखकर उन्होंनेबहुत ही आश्चर्य प्रकट किया। बोले—मामला क्या है पूल? कोई आफ़त-मुसीबत तो नहीं आई? खैरियत तो है?"

"जी, सा तो कुछ नहीं है। लेकिन मामला बड़ा ही बेढब जान पड़ता है!"—कहते-कहते पूल के चेहरे पर हैरत और ख़ौफ की गहरी छाया प्रकट हुई।

एक अज्ञात आशंका से मि० अटर्सन का कलेजा काँप उठा। वह पूल से शान्त होने को कहकर धीरे-धीरे उससे सारा मामला समझने की चेष्टा में लग गये।

ज़रा दम लेकर पूल ने उनके प्रश्नों के उत्तर में कहा—"मेरे मालिक डा० जेकिल की रहन-सहन सभी आप जानते हैं। आजकल वह और भी रहस्यमय हो उठे हैं। हम लोग बहुत डर गये हैं।"

"काहे का डर? सब खुलासा करके कहो पूल।"—मि० अटर्सन ने पूछा।

पूल ने कहा—"एक हफ़्ते से हमें डर लग रहा है।"

इससे अधिक वह और कुछ न कह सका। उसका गला जैसे रुँध गया। मुख और आँखों में आतंक छा गया।

मि० अटर्सन ने अधीर होकर कहा—"समझ गया पूल, तुम बहुत डर गये हो, लेकिन बात क्या है, खोल कर कहो"

"मैं कह नहीं पा रहा हूँ सर। हाँ, अगर एक बार मेरे साथ चलिए तो अपनी आँख से ही सब देख पाइएगा।" —पूल ने घबराई हुई आवाज़ में कहा।

मि० अटर्सन ने मुँह से कुछ नहीं कहा। उठ खड़े हुए, कोट और टोपी पहनकर तैयार होकर उन्होंने पूल की ओर देखा। पूल के जैसे जान में जान आई। वह तेज़ी के साथ मि० अटर्सन के पीछे चला। घर के द्वार पर पहुँचकर पूल ने धीरे-धीरे किवाड़ खटखटाये। भीतर से हल्की आवज़ में किसी ने पूछा—"कौन, पूल?"

गले में ज़ोर देकर और भीतर दृढ़ता लाकर पूल ने कहा—हाँ, मैं हूँ—मैं, दर्वाज़ा खोलो।"

घर के भीतर घुसते ही अटर्सन ने देखा, घर के जितने नौकर-नौकरानी हैं—एक दर्जन के लगभग होंगे—सब एक ही जगह भेड़ों की तरह ठसाठस दबके हुए हैं।

मि० अटर्सन ने कहा—तुम लोगों ने यहाँ इस तरह

भीड़ क्यों कर रखी है? डाक्टर साहब देखेंगे तो नाराज़ होंगे।"

पूल ने जवाब दिया—"सभी डरे हुए हैं साहब।"

साथ ही साथ एक नौकरानी भें-भें करके रो उठी। पूल ने उसे डाँट दिया। फिर एक लड़के नौकर से एक लाल्टेन लाने के लिए कहकर मि० अटर्सन से बोला—"अब ज़रा भी आवाज़ न होने पावे—इस तरह मेरे साथ-साथ आइए। आप के पैरों की आहट देखिए, कोई सुनने न पावे।"

मि० अटर्सन का कलेजा धड़कने लगा। ज़बरदस्ती हृदय में ज़ोर लाकर, पूल के कहने के मुताबिक पिछवाड़े के बाग़ में जा पहुँचे।

डा० जेकिल के बन्द कमरे के पास आकर पूल ने चिल्लाकर कहा—"मि० अटर्सन आये हैं साहब!"

क्या जवाब मिलता है, उसे अच्छी तरह सुनने के लिए पूल ने मि० अटर्सन को इशारा किया।

साथ ही साथ भीतर से जवाब आया—"कह दो, मैं किसी से मुलाक़ात न कर सकूँगा।"

"अच्छा यही कहे देता हूँ सर"—कहकर पूल मि० अटर्सन को इशारे से एकदम दूरवाबचीख़ाने में ले गया।

पूल ने पूछा—"बताइए तो, वह मेरे मालिक की आवाज़ है ?"

मि० अटर्सन ने कहा—"जान पड़ता है, बहुत कुछ बदल गई है और कुछ क्षीण भी हो गई है।"

पूल ने कहा—"बदल गई है !—अच्छा मैंने यही मान लिया कि बदल गई है। लेकिन आज बीस वर्ष से जिस मालिक के पास काम कर रहा हूँ उसके गले की आवाज़ भी न पहचान सकूँगा ?—नहीं साहब, वह नहीं हैं। आठ दिन पहले जब भगवान् का नाम लेकर वह रो रहे थे, तभी उनका सब समाप्त हो गया। अब समस्या यही है कि उनके कमरे में यह कोई दूसरा आदमी किस तरह और क्यों आठ दिन से घुसा हुआ है ! इसे तो एक भगवान् के सिवा और कोई बता नहीं सकेगा मि० अटर्सन !"

दाँत से उँगली काटते हुए मि० अटर्सन ने कहा—"यह तो बड़ी भयानक बात तुम कह रहे हो पूल। अच्छा, तुम्हारे ख़याल को ही मैंने सच मान लिया। लेकिन सवाल यह है कि उनकी हत्या करने वाला आदमी भाग न जाकर यहीं बैठा रहेगा, इसी पर विश्वास कैसे किया जाय ?

पूल ने कहा—"उपयुक्त प्रमाण के बिना आपको सन्तुष्ट नहीं किया जा सकेगा, यह मैं जानता हूँ। एक हफ़्ता पहले मेरे मालिक एक दवा के लिए पागल से हो उठे

थे। उन्हें इस दवा की जब ज़रूरत होती थी तो घर के भीतर से ही एक कागज की चिट लिखकर भेजते थे। इस दवा के लिए इस तरह चिट कितनी बार भेजी होगी, इसका कुछ हिसाब नहीं। अब की दवा भी नहीं मिली और वह भी शान्ति नहीं हुए। लंदन शहर में ऐसा कोई दवाखाना या डाक्टरख़ाना नहीं, जहाँ जाकर मैंने उस दवा की तलाश न की हो। अन्त को उन्होंने मुझे मेसर्स एम० के० डाक्टरख़ाने भेजा।"

"यहाँ कई साल पहले उन्हें यह दवा मिली थी। इस डाक्टरख़ाने में ज़रा-सी भी यह दवा मिल जाय, इस आशा से उन्होंने बहुत करुणभाव से दवा के लिए विनय करके चिट्ठी लिखी थी। मगर डाक्टरखाने के लोग चिट्ठी पढ़कर ही एकदम बिगड़ उठे। उन्होंने वह चिट्ठी उठाकर गुस्से से फेंक दी।"

मि० अटर्सन ने पूछा—"चिट्ठी तुम्हारे मालिक के हाथ की लिखी थी? तुमने उनके अक्षर ठीक पहचान लिये थे?"

पूल ने कहा—"जी हाँ, लिखावट उन्हीं के हाथ की-सी थी। फिर इससे क्या आता-जाता है साहब? अपनी आँखों पर तो अविश्वास नहीं कर सकता? एक आदमी को मैंने उस दिन कमरे के भीतर अपनी आँखों से देखा था।"

मि० अटर्सन ने विस्मय के साथ पूछा—"उस आदमी को तुमने अपनी आँख से देखा था।"

पूल ने कहा—"हाँ सर, बाग़ की तरफ़ से केवल एक बार उस आदमी को मैंने देखा था। आँख से आँख मिलते ही पल भर में ही विकट चीत्कार करके वह सामने से हट गया। लेकिन पल भर में ही जो एक झपकी उसकी देखी, उसीसे मेरे सिर के बाल तक आतंक से खड़े हो गये। उसने चेहरे पर एक विकट नक़ली 'चेहरा' लगाये हुए था। वह अगर डा० जेकिल होते तो मुझ अपने पुराने नौकर को देखकर इस तरह हट क्यों जाते? इस तरह चिल्ला क्यों उठते?"

पूलने दुःख के मारे दोनों हाथों से मुँह ढक लिया।

मि० अटर्सन ने सहानुभूति प्रकट करके कहा—"इस मामले में कुछ रहस्य जान पड़ता है।"

पूलने दृढ़ स्वर में कहा—"आप इसे चाहे जो समझें, मेरा पक्का विश्वास है कि वह नक़ली चेहरेवाला आदमी किसी तरह मेरे मालिक नहीं हो सकते।"

ज़रा रुककर मि० अटर्सन के कान के पास मुँह ले जाकर उसने कहा—"मेरे मालिक लंबे-तड़ंगे खूबसूरत आदमी हैं—और वह आदमी कितना ठिंगना है।"

मि० अटर्सन ने हल्का-सा प्रतिवाद करने की चेष्टा

का। पूल ने उत्तेजित होकर कहा—"आप कहते क्या हैं सर, बीस साल से हर रोज़ जिनको देखता आ रहा हूँ—जिनके जीवन के साथ मेरे जीवन के अधिकांश दिन इस तरह ओतप्रोत हैं जैसे कपड़ा में ताना-बाना, उन्हें आँखों से देखकर भी मुझसे ग़ल्ती होगी ? मैं ज़ोर के साथ कहता हूँ कि वह आदमी कभी डाक्टर जेकिल नहीं हैं !"

मि० अटर्सन ने कहा—पूल, तुम अगर इतना ज़ोर देकर कहते हो, तो हमें इस बारे में पहले निश्चय कर लेना होगा—कमरे का दरवाज़ा तोड़ना होगा।"

"हाँ, मैं भी यही कहता हूँ"—पूल ने उत्साह के साथ कहा।

मि० अटर्सन ने कहा—"अब सवाल यह है कि इस काम को करेगा कौन ?"

"क्यों ? आप और मैं"—पूल के स्वर में दृढ़ता का आभास था।

मि० अटर्सन ने कहा—"अच्छी बात है, मैं राज़ी हूँ। मैं यह भी देखूँगा कि इससे तुमको कोई हानि न पहुँचे।"

पूल ने कहा—"उस कमरे में एक बड़ा साबल है, उसे मैं लूँगा और आप लीजिएगा बाबर्चीख़ाने का वह भारी डंडा।"

दोनों जने दोनों शस्त्र लेकर तैयार हुए। मि० अटर्सन ने कहा—"लेकिन पूल, तुमने यह सोचकर देख लिया है कि हम दोनों ही जने इससे विपत्ति में भी पड़ सकते हैं ?"

पूल ने कहा—"हाँ सर, यह मैं जानता हूँ।"

अटर्सन ने पूछा—"अच्छा, तुमने जो चेहरा लगाये मूर्त्ति देखी है, उसे फिर देखो तो क्या पहचान सकते हो ?"

पूल ने कहा—"घड़ी भर के लिए देखा है, इससे शायद पहचान न पाऊँगा। लेकिन अगर आप यह पूछें कि वह हाइड तो नहीं है तो मैं कहूँगा, उसकी सब बातें हाइड की सी ही हैं। इतना चटपट चलना-फिरना हाइड के सिवा और किसी का मैंने नहीं देखा। आपने हाइड को देखा तो है ?"

मि० अटर्सन ने कहा—"हाँ देखा है और एक दिन उससे बात भी की है।"

पूल ने कहा—"तो आप निश्चय ही इस आदमी के प्रकृति के बारे में कुछ कुछ जानते हैं ?"

मि० अटर्सन चटपट कह उठे—"हाँ, तुम जो चाहते हो, वह सभी मैं जानता हूँ मेरे मन में भी तुम्हारी ही तरह यह भय हो रहा है कि शायद जेकिल की हत्या करके हत्यारा इसी कमरे के भीतर है। तुम दोनों वक्त खाने को दे आते हो—वह बेखटके जेकिल बना हुआ खाता-पीता

है। अब और देर न करो, ब्रैड्स को बुलाओ।"

ब्रैड्स जेकिल का एक और नौकर है। मि० अटर्सन ने उससे कहा—"तुम लोग जिस सन्देह और उत्कंठा के साथ दिन काट रहे हो, उसका आज मैं अन्त करना चाहता हूँ। और हम लोगों को जो डर हो रहा है वही अगर हो तो उसके लिए भी हम लोगों को ज़रा होशियार रहना होगा। तुम और लड़का नौकर; दोनों पीछे की तरफ रास्ता रोके रहना। उधर से कोई भागने न पावे, इस पर ध्यान रखना। अच्छा तो तुम दोनों दो लाठियाँ लेकर उधर पहरे पर जाओ। मैं तुमको इसके लिए दस मिनट का समय देता हूँ।"

ब्रैड्स चला गया। मि० अटर्सन ने कलाई की घड़ी देखी। इसके बाद पूल की ओर देखकर कहा—चलो पूल, हम लोग चलकर अपना काम करें।"

दोनों डा० जेकिल के कमरे की ओर आगे बढ़ने लगे। चारों ओर सन्नाटा था। बीच-बीच में हवा की सनसनाहट के सिवा और कोई शब्द नहीं सुनाई पड़ रहा था। एकाएक उस सन्नाटे को तोड़कर हवा में एक शब्द जैसे तैर गया। वे जितना ही हाल की ओर आगे बढ़ते गये उतना ही वह शब्द स्पष्ट होने लगा। ठीक जैसे एक फ़ुटबाल फ़र्श पर इधर-उधर लुढ़क रहा हो।

फिसफिसाकर पूल ने कहा— सुनते हैं ? इस घर के भीतर दिन भर ऐसा ही शब्द होता रहता है। किसी-किसी दिन गहरी रात तक भी यह सुना जाता है। केवल जब थोड़ी-सी दवा ला देता हूँ तब कुछ देर के लिए यह शब्द थम जाता है। फिर बीच-बीच में एक रोने की आवज़ भी आती है। जैसे किसी औरत या किसी हताश आदमी का रोना हो।"

मि० अटर्सन ने कहा—"अभी दस मिनट में सब सन्देह दूर हो जायगा—अधिक नहीं, दस मिनट।"

इतने दिनों की एक जमा हुई उत्कण्ठा मि० अटर्सन के शरीर और मन पर छाई हुई है। दस मिनट बाद ही उसकी समाप्ति हो जायगी। उत्तेजना के मारे मि० अटर्सन काँपने लगे। किन्तु पूल के सामने उन्होंने धीरज बनाये रखा—यद्यपि वह आप भी नहीं जानते कि जिस काम को करने वह जा रहे हैं, उसका परिणाम क्या होगा !

दस मिनट बीत गये। वे आक्रमण के लिए तैयार हैं। रोशनी एक टेबिल पर ठीक करके रखी गई। पूल ने अपना साबल सँभाला। मि० अटर्सन ने भी लोहे का भारी डंडा उठाया।

मि० अटर्सन ने चीख़कर पुकारा—"जेकिल ! मैं तुमको देखना चाहता हूँ ?" इसके बाद ज़रा थम गये।

कोई जवाब नहीं आया।

मि० अटर्सन ने फिर चीख़कर कर कहा—"हम लोगों का सन्देह क्रमशः बढ़ता जा रहा है। हम तुमको आख़िरी बार चेतावे देते हैं। तुमको हम देखेंगे ही। सीधी तरह से न सामने आओगे तो हम और उपाय का सहारा लेंगे। अब भी अगर हमारी बात पर राज़ी न हुए तो हम पाशविक शक्ति का प्रयोग करने में भी नहीं हिचकेंगे।"

अब की भीतर से जवाब आया—"अटर्सन भगवान् के लिए दया करो।"

मि० अटर्सन चिल्ला उठे—"आह, यह जेकिल की आवाज़ नहीं है—यह हाइड की आवाज़ है। पूल, जल्दी दर्वाज़ा तोड़ो!"

पूल ने अपना साबल उठाया। कंधे पर वह हिला और इसके बाद ही दर्वाज़े पर एक प्रचण्ड चोट पड़ी। उस भयानक प्रहार से सारा कमरा काँप उठा। कब्ज़ा, ज़ंजीर और ताले के संघर्ष से किवाड़ें झनझन करके काँप उठे। बड़े कमरे के भीतर जैसे एक जंगली जानवर गरज उठा। इस गरजने में निराशा का भाव व्यक्त हो रहा था।

पूल उस समय जान की बाज़ी लगाए हुए था। इसके बाद लगातार एक के बाद एक चार प्रचण्ड चोटें किवाड़ों पर पड़ीं। लेकिन तारीफ़ करनी होगी उस लकड़ी

की जिससे वह द्वार बना था और उस मिस्त्री की जिसने उसे चौखटे में बिठाया था। चार-चार प्रचण्ड चोटों को वह द्वार बेमालूम हज़ाम कर गया। किन्तु पूल की पाँचवीं चोट, जिसे उसने पूरी ताक़त से लगाया था, और भी भयानक हुई। उसे वह द्वार नहीं सह सका। ज़ोर के शब्द के साथ टूट कर वह भीतर के फ़र्श पर बिछे कार्पेट के ऊपर उलट पड़ा। जैसे एक बहुत भारी पेड़ प्रचंड हवा के झोंके से ज़ड़ से उखड़कर गिर पड़ा हो।

दर्वाज़ा टूटने के बाद देखा गया, वह एक खूब सुसज्जित घर है। उज्ज्वल प्रकाश से प्रकाशित होकर सूर्य की किरणों से उज्ज्वल दिन-सा वहाँ जगमगा रहा है। घर का सामान और सजावट की चीज़ें तथास्थान क़रीने से रखी हुई हैं। बीच में एक मृतप्राय देह पेट के बल पड़ी हुई है। वह उस समय भी मामूली हिल-डुल रही थी। मि० अटर्सन वग़ैरह बहुत धीरे पैर बढ़ाते हुए उस शरीर के पास गये। धीरे-धीरे उसे उलटकर उन्होंने देखा। यह क्या! यह एडवर्ड हाइड का चेहरा है। उसके शरीर पर उसके शरीर के नाप से बड़ी पोशाक है—ठीक डा० जेकिल के नाप के कपड़े हैं। सब तरफ़ से ढीले-ढाले हैं वे। मि० अटर्सन ने परीक्षा करके देखा, अभागे की देह में प्राण नहीं हैं। उसके हाथ की मुट्ठी में एक उग्र विष की शीशी

है। बेचारे ने इसी विष की सहायता से आत्महत्या कर ली है, इसमें अब सन्देह नहीं रहा।

मि० अटर्सन ने कहा—"हम लोग बड़ी देर में पहुँचे पूल! हाइड अपनी व्यवस्था आप कर गया है। अब जेकिल को खोज निकालना होगा।"

सारा घर रत्ती-रत्ती खोज डाला गया, कहीं डा० जेकिल का पता नहीं लगा। मि० अटर्सन के माथे की नस दुश्चिन्ता से फूल उठीं। पूल और वह, दोनों ही भौचक्के हो रहे थे। इतना बड़ा आदमी इस बंद कमरे के भीतर से कहाँ उड़ जायगा? मि० अटर्सन ने दृढ़ स्वर में कहा—"जीते हों या मरे, डा० जेकिल को ढूँढ़ निकालना ही होगा।"

इस कमरे से लगी हुई एक दालान थी। पूल ने ज़ोर देकर कहा—"इस दालान में निश्चय ही उनकी लाश गाड़ दी गई है।"

पूल की आँखों में आँसू भर आये।

मि० अटर्सन ने कहा—"पीछे के दरवाज़े से भी बाहर निकल जा सकते हैं—इस दर्वाज़े से निकलते ही वह तंग गली का रास्ता मिलता है।"

उन्होंने फिर दालान के पिछले द्वार में लगे ताले की परीक्षा करते-करते कहा—"देखता हूँ, यह ताला बहुत दिनों से खोला नहीं गया। ज़ंग लगने से इसकी सूरत ही

बदल गई है।

ताले की चाभी उसी जगत से पाई गई। उसमें सिर्फ़ ज़ंग ही नहीं लगा था, उसे जैसे कोई जोड़ कर टुकड़े-टुकड़े करके रख गया था। टुकड़ों में भी ज़ंग लग रहा था।

मि० अटर्सन ने कहा—"चलो पूल, उस कमरे को ही अच्छी तरह जाँच करके देखें। इधर वह नहीं आया।"

कमरे को लौटते समय मि० अटर्सन ने एकबार हाइड की देह की ओर नज़र डाली। अब वह एकदम मुर्दा हो गई थी।

कमरे में एक मेज़ के ऊपर कुछ दवा का चूरा बिखरा पड़ा था। जैसे उसपर कोई दवा का काम कर रहा था। और एक काँच की तश्तरी में थोड़ा-सा नमक की क़िस्म का सफेद पाउडर था। दवा वग़ैरह इस तरह इधर-उधर बिखरी पड़ी थी कि देखकर जान पड़ता है, कोई जैसे कुछ परीक्षा कर रहा था और बीच में कोई बाधा पाकर रुक गया है। यहाँ तक कि एक केतली में उस समय भी पानी गरम हो रहा था और उससे ज़ोर की भाप निकल रही थी।

पूल ने कहा—"यही दवा मैं उनके लिए बार-बार अनेक बार ख़रीद लाया हूँ।"

मि० अटर्सन उस लाश पर और एक बार नज़र

डाल कर डा० जेकिल के लिखने-पढ़ने की मेज़ के पास उपस्थित हुए। डेक्स के भीतर तह की तह काग़ज़ सजाये रखे थे। सब के ऊपर एक बड़े आकार का लिफाफा उन्हें देख पड़ा। लिफाफे के ऊपर मि० अटर्सन का ही नाम लिखा हुआ था। उन्होंने उसी समय लिफाफा फाड़ कर वह पत्र देखा। एक साँस में वह उसे आदि से अन्त तक पढ़ गये। उस कागज़ में सब ठीक ठाक था। केवल यह बात पीछे से काट कर लिखी गई थी कि डा० जेकिल के लापता होने पर उनकी जायदाद हाइड नहीं पावेगा, पावेंगे मि० अटर्सन। अटर्सन का विस्मय और बढ़ गया—अन्त को डाक्टर ने उन्हीं को अपना वारिस पसंद किया।

ठीक उसके नीचे ही और एक काग़ज़ में मि० अटर्सन के लिए एक छोटा सा निर्देश लिखा था। उस निर्देश को पढ़ते ही मि० अटर्सन कुर्सी से उछल पड़े। पुलक और विस्मय से उनके शरीर के सब रोएँ खड़े हो गये। उन्होंने चिल्ला कर कहा—"पूल तुम्हारे मालिक ज़िंदा हैं—वह आज भी इस घर में थे। निश्चय हो वह कहीं भागे हुए हैं। अब मैं ज़ोर देकर नहीं कह सकता कि हाइड की यह मौत आत्महत्या है या नहीं।"

पूल ने आग्रह के साथ कहा—पढ़ कर सुनाइए न सर, यह काग़ज़।"

मि० अटर्सन पूल को सुनाने के लिए वह 'निर्देश' पढ़ने लगे। उसमें लिखा था—

"प्रिय अटर्सन,

यह चिट्ठी जब तुम्हारे हाथ में पड़ेगी, तब मैं ऐसी जगह की यात्रा कर चुका होऊँगा, जिसका पता किसी को नहीं है। मैंने ऐसा क्यों किया, यह कह न सकूंगा। लेकिन यह तुम पक्का जानो कि मेरा आख़री समय बिल्कुल पास आगया है या आ रहा है। अब तुम लेनियन का वह पत्र पढ़ो जो तुम्हारे पास रखा है। और भी अधिक अगर जानना चाहो तो मेरी "आत्म-कथा" पढ़ने ही से सब समझ सकोगे। इति—

तुम्हारा नालायक़ और चिर-दुखी मित्र
"हेनरी जेकिल"

मि० अटर्सन ने उत्सुक होकर पूछा—और भी कोई पत्र है क्या? जेकिल की आत्म-कथा?"

"हाँ, यह है सर"—कह कर पूल ने उनके हाथ में एक बड़ा-सा मोहरबंद लिफाफा लाकर दे दिया।

मि० अटर्सन ने वह लिफाफा पाकेट में रख कर कहा—"इस समय अब और कुछ नहीं करना है। मैं ठीक रात के बारह बजे लौट आकर पुलीस को ख़बर दूँगा। तब तक तुम लोग इस घर पर पहरा देते रहो।"

८

# रहस्य-भेद

घर लौटकर मि० अटर्सन ने पहले डा० लेनियन का लिफाफा खोला। पहले एक छोटी-सी भूमिका थी, जिसमें लिखा था—

"चार दिन पहले, ९ जनवरी को, मैंने हेनरी जेकिल के पास से संध्या समय डाक द्वारा एक रजिस्टर्ड लिफाफा पाया। इससे मुझे बहुत ही आश्चर्य हुआ। स्कूल में जब पढ़ते थे, तभी से हम दोनों की मित्रता चली आ रही है। हम लोग कभी एक दूसरे को चिट्ठी नहीं लिखते ; क्योंकि ज़रूरत पड़ने पर या कुछ कहना-सुनना हुआ तो मिल लेते थे। इसके सिवा अभी इसके पहले के दिन ही रात को उनके यहाँ रात का भोजन कर आया हूँ। एकाएक ऐसा क्या हो गया कि उनके पास से रजिस्ट्री चिट्ठी आई ? एक साँस में मैंने वह चिट्ठी पढ़ डाली। उसमें यह लिखा था—

'प्रिय लेनियन, १८ दिसम्बर, १८.....

तुम मेरे सबसे पुराने मित्र हो। यद्यपि किसी-किसी

वैज्ञानिक समस्या में तुम्हारे साथ मेरी राय नहीं मिलती, तो भी हम दोनों की हार्दिक मित्रता और विश्वास में किसी दिन कमी नहीं हुई। अगर तुम किसी दिन मुझसे कहते कि जेकिल, मेरा सम्मान तुम्हारे ऊपर निर्भर है, तो मैं तुमको सहायता करने में कभी कोताही न करता। आज मेरा जीवन और मरण सभी तुम्हारे ऊपर निर्भर है। मैं आज तुमसे जो करने का अनुरोध कर रहा हूँ, उसकी रक्षा अगर तुमने नहीं की तो जान लेना, मेरा सब समाप्त हो गया। शायद तुम सोचो या समझोगे कि मैं कुछ ऐसी बात करने को कहूँगा जो तुम्हारे लिए सम्मानजनक न होगी—तो मैं इस के विचार का भार तुम पर ही छोड़ता हूँ। अब मन लगाकर सुनो, तुमको क्या करना होगा।

'तुम्हारा, चाहे जितना ज़रूरी काम क्यों न हो, आज रात को तुम्हें सब काम बन्द रखने होंगे—सीधे मेरे घर चले आना। दर्वाज़ो पर पूल तुम्हारी प्रतीक्षा करेगा। उसके साथ एक लुहार रहेगा। इसके बाद वह लुहार छेनी-हथौड़ी से मेरे कमरे का ताला तोड़ देगा। कमरे में लेनियन तुम्हीं अकेले घुसना। बाएँ हाथ को तुम्हें एक आलमारी देख पड़ेगी। उसमें अँगरेज़ी के ई (E) अक्षर का निशान पड़ा हुआ है। अगर यह आलमारी बंद मिले तो उसका भी ताला तोड़ डालना। इसके बाद ऊपर से चौथी दराज

खींचकर बाहर कर लेना। दराज में जो कुछ है उसे वैसा ही रहने देकर सीधे कवेंडिस स्क्वायर में अपने घर चले जाना। एक बार केवल यह देख लेना, दराज़ों में कुछ नमक की क़िस्म का चूरा, एक शीशी और एक कापी है कि नहीं; क्योंकि इस समय मेरे मन की जैसी दशा है, उससे मेरे बयान में ग़लती होना बहुत ही स्वाभाविक है।

'यह तो हुई शुरू की बात। अब असल बात कहता हूँ। तुम अगर यह चिट्ठी पाते ही निकल पड़ो तो यहाँ का काम करके भी तुम्हारे लिए बहुत-सा समय बच रहेगा। अपने नौकर-चाकरों को जल्दी-जल्दी छुट्टी देकर ठीक रात के बारह बजने तक उस कमरे में प्रतीक्षा करना, जिसमें बैठकर तुम रोगियों को देखते हो। मेरा नाम लेकर जो कोई तुमसे आकर भेंट करे, उसे सब सामान समेत वह दराज़ सौंप देना। यहीं पर तुम्हारा काम समाप्त हो गया। शायद तुम्हारे लिए इस चिट्ठी का महत्त्व वैसा कुछ नहीं है; लेकिन मेरा जीवन, मेरा सम्मान, मेरी इज़्ज़त, सब कुछ इस चिट्ठी पर और तुम पर निर्भर है। लेनियन, मुझे बचाओ। मुझे निराश न करना। इति—

तुम्हारा मित्र,
एच० जे०

'पुनश्चः—कहीं डाकख़ाने की किसी गड़बड़ से यह

चिट्ठी देर से न मिले, इस आशंका से मैं तुमको कल की आधी रात तक का समय देता हूँ। कल आधी रात तक भी अगर तुम मेरा काम न कर सके तो जान लेना, तुम्हारा मित्र जेकिल इस दुनिया में नहीं होगा।'

"इस तरह की चिट्ठी पाकर साधारणतः लोग जैसा सोचते हैं, वही मैंने भी सोचा। निश्चय ही जेकिल पागल हो गया है। पहले तो उसका जीवन एक रहस्य हो उठा है। उसके ऊपर एक साधारण अनुरोध के लिए कितनी खुशामद और प्रार्थना! और इस अनुरोध का प्रयोजन भी मेरे डाक्टरी दिमाग़ को न सूझा। इस चिट्ठी का ठीक उत्तर तो यही है कि उसे दिमाग़ ठंडा करने की एक दवा भेज दी जाय—यही उचित है। डाक्टर मित्र से वह इससे अधिक क्या आशा कर सकता है?

"खैर चिट्ठी पढ़कर फिर मित्र के अनुरोध की उपेक्षा करने को जी न चाहा। उसी दम तैयार होकर उसके घर की तरफ़ चल दिया। दर्वाज़े पर खड़ा पूल मेरी राह देख रहा था। साथ ही आया एक लुहार और एक बढ़ई। हम लोग जेकिल के बैठने के ख़ास कमरे के दर्वाज़े पर पहुँचे। वहाँ जाकर—देखा, उसमें खूब मज़बूत और भारी एक ताला बंद है। दो घंटे तक लगातार परिश्रम करने पर ताला खुला। मैं अकेला ही कमरे के भीतर गया। पहले ही

'E' मार्का आलमारी देख पड़ी। आलमारी खुली ही थी — उसमें कोई ताला नहीं बंद था। ऊपर से चौथी दराज़ निकालकर नीचे रखी और बड़ी सावधानी से चिट्ठी में लिखी सब चीज़ें उस चिट्ठी से मिलाकर देखीं। फिर सीधा अपने घर आया।

"घर आते ही उस दराज़ की जाँच की। दोनों दवाएँ (पाउडर) देखकर कुछ समझ में न आया। वह कापी भी एक डायरी की तरह थी। उसमें शुरू से आख़ीर तक बस तारीखें-ही-तारीखें भरी पड़ी हैं। छोटी-मोटी टीका-टिप्पणी भी बीच-बीच में है—जैसे 'डबल', 'बिल्कुल असफल'। जिसने लिखा, वही समझे—ऐसी भाषा में।

"सवेरे-सवेरे—यानी वक़्त से पहले—नौकर-चाकरों को छुट्टी देकर मैं रोगी देखने के कमरे में जेकिल के भेजे आदमी की राह देखने लगा। सब चिट्ठी के निर्देश के मांफिक ठीक-ठीक किया गया। जितना मैं मन में यह सोचता कि यह काम करने के लिए मेरी क्यों ज़रूरत हुई—किसी भी विश्वासी नौकर से यह काम कराया जा सकता था, उतना ही जान पड़ता था कि जेकिल का दिमाग़ ठीक नहीं है। लेकिन मामला सीधा-सादा नहीं है, इसमें कोई सन्देह नहीं रहा। आत्मरक्षा के लिए एक रिवाल्वर भरकर पास रख लिया।

"गिर्जे की घड़ी में जैसे ही टन-टन करके बारह बजे, वैसे ही मेरे दरवाज़े पर किसी ने हल्के से थपकी दी। मैंने आपही उठकर दरवाज़ा खोल दिया। देखा, एक ठिंगने क़द का आदमी सामने खड़ा है। मैंने पूछा—'तुम्हें डा० जेकिल ने भेजा है?' उसने कहा—'हाँ'।

"मैंने रिवाल्वर को एक दफ़े अच्छी तरह चुपके-चुपके देख लिया। वह आदमी मेरे सोने के घर तक मेरे पीछे चला आया। इसी बीच में मैंने उसे और एक बार अच्छी तरह देखा। उसका चेहरा देखने से डर लगता है। उसकी सूरत भी साधारण आदमियों की-सी नहीं है। और पोशाक देखने से हँसी रोके नहीं रुकती। पोशाक के कपड़े क़ीमती सिल्क के बने ज़रूर हैं, लेकिन इतने ढीले-ढाले हैं कि जैसे ठीक सर्कस का मसख़रा हो।

"भीतर आते ही उसने अधीर भाव से पूछा—'वह लाये हैं? लाये हैं?' वह इतना अधीर हो उठा था कि मेरा कंधा पकड़कर झकझोरने को चला। उसके इस अशिष्ट व्यवहार से खीझकर मैं कुछ पीछे हट गया। मैंने कहा—'पहले बैठिए, आलाप-परिचय हो; उसके बाद आप को जो कहना हो, कहिएगा।' उसने कहा—'क्षमा कीजिएगा, धीरज न रहने से साधारण शिष्टाचार भी मैं भूल गया। आपके मित्र डा० जेकिल के कहने से केवल कुछ

मिनट के लिए आया हूँ। मैं जहाँ तक जानता हूँ.....'—सिर्फ़ इतना कहकर वह रुक गया। इस के बाद चेहरे को बहुत बुरी तरह विकृत करके उसने आप ही अपने गले को दोनों हाथों से दबाया—जैसे वह मिर्गी रोग के आक्रमण से अपनी रक्षा कर रहा हो। इसके बाद पहले की बात के सिलसिले में उसने कहा—'मैं जहाँ तक जानता हूँ, एक दराज यहाँ से मुझे ले जानी होगी।' मैंने कहा—'वह, वहाँ रखी है।'

"वह आदमी एकदम अपनी जगह से उछल पड़ा, फिर रुक गया, अपनी छाती पर हाथ रखा और दाँत से दाँत दबाकर ऐसा मुँह बनाने लगा कि मुझे बड़ा डर लगने लगा। मैंने कहा—'इतने अधीर क्यों होते हैं? शान्त होइए।'

"वह मेरे मुँह की ओर देखकर हँसा। ओह, कैसी भयानक थी वह हँसी! इसके बाद दवा पीने का मेजर-ग्लास (दवा नापकर पीने का पात्र) उसने मुझसे माँग लिया दराज में की लाल रंग की दवा उसमें नापकर डाली॥ फिर उसमें दूसरी दवा या सफ़ेद पाउडर उसमें मिला दिया। साथ-ही-साथ गिलास से धुआँ उठने लगा। अंत को उस मिश्रित दवा का रंग पानी-जैसा हो गया। अबकी उसने चैन की साँस लेकर कहा—'आपको मैं एक नई चीज़ दिखा सकता हूँ। जादू, बिल्कुल जादू! आप अगर

नई विद्या सीख लें तो पृथ्वी पर आपको बहुत मान-सम्मान प्राप्त होगा। यहीं पर मैं अपनी विद्या की परख दिखा सकता हूँ। अच्छी तरह मन स्थिर करके जवाब दीजिए; क्योंकि एक बार अगर आप राज़ी हों तो मैं अपना काम शुरू कर दूँगा।'

"मैंने कहा—'इतनी दूर मैं आगे बढ़ चुका हूँ, अतएव इसका अन्त देखे बिना नहीं छोड़ूँगा।'

"उसने कहा—'अच्छी बात है। सुनो लेनियन, तुमने सिर्फ़ रोगी और कुछ साधारण दवाओं में ही जीवन बिता दिया। विज्ञान के गूढ़ रहस्य के भीतर घुसने की चेष्टा तुमने कभी नहीं की। विज्ञान के ज़ोर से एक मनुष्य को बदलकर दूसरा मनुष्य बना दिया जा सकता है, यह तुम स्वप्न में भी नहीं सोच सकते। मेरी तरफ़ ध्यान से देखो'— इतना कहकर ही वह आदमी वह मिक्सचर सब का सब पी गया। एक बार वह आर्त्तनाद कर उठा। इसके बाद उसके पैर लड़खड़ाने और सिर काँपने लगा। शराबी की तरह काँपते-काँपते उसने हाथ से मेज पकड़ ली और मुँह खोलकर ज़ोर-ज़ोर से साँस लेने लगा। अब उसका चेहरा स्याह हो गया और सारी देह फूलने लगी! वह कैसी विभीषिका थी! मैं अपनी कुर्सी से एकदम उछल पड़ा। पीछे हटकर एकदम दीवार से सट गया। दोनों

आँखें हाथों से ढक लीं—यह मूर्ति आँखों से देखनी न पड़े! 'हाय भगवान्!' कहकर मैं चिल्ला उठा। इसके बाद जो देखा—मैं अपनी आँखों पर ही विश्वास नहीं कर पा रहा हूँ—देखा, मेरे सामने सशरीर डाक्टर जेकिल खड़े हैं!

"इसके बाद जेकिल ने मुझसे क्या कहा या मैंने उसका क्या जवाब दिया, कुछ भी मुझे याद नहीं। मैं उस समय अपने आपे में न था। इस प्रचण्ड धक्के को मेरी स्नायुएँ सह न सकेंगी। मेरी ज़िंदगी के दिन पूरे हो आये हैं। मैं देख पा रहा हूँ कि मौत मुझे हाथ के इशारे से अपनी ओर बुला रही है। अब शायद तुम समझ पा रहे हो कि जो मनुष्य की देह धरे हुए जीव जेकिल का आदमी बनकर मेरे पास आया था, वह खुद जेकिल के सिवा और कोई न था। वही हाइड के नाम से सारे लंदन शहर में आतंक और विभीषिका फैलाता था, और वही सर डन्वर्स कैरो की हत्या करनेवाला आदमी है।"

मि० अटर्सन इस लम्बे पत्र को पढ़कर विमूढ़-से बैठे रहे। कुछ देर बाद अपने को थोड़ा-सा सँभालकर वह डा० जेकिल की लिखी आत्म-जीवनी पढ़ने लगे, जो इस प्रकार थी—

"उन्नीसवीं शदी में मेरा जन्म हुआ। अतुल सम्पत्ति और तीक्ष्ण बुद्धि का अधिकारी करके भगवान् ने मुझे

पृथ्वी पर भेजा था। दिन-दिन मेरी उस बुद्धि का विकास होने लगा। बड़े लोगों ने मुझमें क्या देखा था, मैं नहीं जानता; किन्तु वे मेरी बुद्धि की प्रशंसा करते थे और मेरी हमजोली के लोग मेरी भरपूर खुशामद करते थे। यह बात मैं अक्सर लोगों के मुँह से सुनता था कि मेरे आगे एक उज्ज्वल भविष्य खड़ा हुआ है। ये बातें सुनना भी मुझे अच्छा लगता था। बड़ा होऊँगा, समाज में सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त करूँगा, ऐसी एक उच्च आकांक्षा मैं अपने मन में रखता था। लेकिन इस तरह के मन्तव्य सुनते-सुनते मेरा मन कुछ इस तरह का बन गया कि मैं मानसिक संतुलन खो बैठा—विवेक-बुद्धि से मैं ख़ाली हो गया। इसका नतीजा यह हुआ कि मैं एक खुशामद पसंद छिछोरा-सा आदम हो उठा। तब मेरे लिए अपनी सत्ता बनाये रखना, अपनी असली प्रकृति या स्वभाव की रक्षा करना कठिन हो पड़ा। मेरे हलके मन में गंभीरता लाने की प्रबल इच्छा भी जगती थी; किन्तु उस गांभीर्य को बनाये रखना मेरे लिए संभव न होता था। इसके बाद एक दिन मैंने अपने को देखा, मैं एक अद्भुत मनुष्य बन गया हूँ। दो परस्पर विपरीत मनोभाव मेरे भीतर प्रधान हो उठे हैं और वे ही बारी-बारी से अपनी ओर घसीटकर मुझे चला रहे हैं। मैं किधर, कहाँ जा रहा हूँ, यह स्वयं ही नहीं कह सकता। अवश्य ही यह

बात नहीं है कि यह दोष और साधारण लोगों में नहीं होता; किन्तु मेरी सत्ता या अन्तःकरण के भीतर यह जो नित्य द्वन्द्व चलने लगा, उसे मैं सर्वसाधारण की आँखों से छिपा रखने की चेष्टा करने लगा। कारण, मेरे भीतर के ये परस्पर विरोधी दो रूप मुझे लज्जित ही करते थे।

"इसी तरह मेरी अद्भुत जीवन-यात्रा की जो नई परिस्थिति उत्पन्न हुई, उसी से मेरा भविष्य जीवन गठित होने लगा। उजाले-अँधेरे का यह खेल, भले-बुरे का यह हिचकोला, अंतःकरण के गंभीरतम प्रदेश का यह लगातार संघर्ष या द्वन्द्व एक साधारण मनुष्य के भीतर क्या प्रतिक्रिया करता है, मैं नहीं जानता; किन्तु मेरे हृदय के भीतर धर्म या नीति का प्रभाव पूर्णरूप से बना हुआ था। वह बिल्कुल नष्ट नहीं हुआ था।

"हाँ—इस समय मुझे पूरा-पूरा एक दोहरे चरित्र का मनुष्य कहा जा सकता है—लेकिन मैंने कपट का कभी सहारा नहीं लिया। आत्मवंचना या ढोंग करके मैंने अपने चरित्र को कभी जटिल या दुर्ज्ञेय नहीं बना दिया। मेरे दोनों रूप अत्यन्त प्रकट थे; दिन के प्रकाश की तरह स्पष्ट दिखाई देते थे। जब विवेक मुझे त्याग कर देता था, तब मैं एक घृणित जीव हो जाता था। और जब दिन के प्रकाश में आदमियों के साथ मिलकर विज्ञान की चर्चा में

अपने को लीन कर देता था—अपने अस्तित्व तक को भूल जाता था, तब मैं सच्चा 'मनुष्य' बन जाता था। मनुष्य की अन्तरात्मा में जिस देवता का वास है, उसके चिह्न मेरी आँखों में, चेहरे पर, शरीर के हरएक हिस्से में प्रकट हो उठते थे।

"इसके बाद लक्ष्य को स्थिर रखकर दिन-दिन विज्ञान की चर्चा में आगे बढ़ने लगा। कोई भी बाधा मेरे इस उद्यम को रोक नहीं पाई। अन्त को मैं अपने लक्ष्य पर पहुँच गया। जिस सत्य के पीछे मैंने जीवन, यौवन, सब अर्पण किया था, उस चाही हुई वस्तु को मैंने अपनी आँखों के सामने देख पाया। मेरी साधना सफल हुई। मेरे ज्ञान-नेत्र खुल गये। उन आँखों से मैंने देखा कि हरएक आदमी दो परस्पर-विरोधी चरित्र लेकर पृथ्वी पर जन्म लेता है। एक ही आदमी में ये दोनों रूप हमेशा जगते रहते हैं। जिसके भीतर जो रूप अधिकतर सचेतन है, उसका चरित्र भी उसी प्रकृति का बन जाता है। यही मेरे सारे जीवन की साधना—मेरी वैज्ञानिक खोज का सिद्धान्त है। शायद आगे चलकर और भी अनेक वैज्ञानिक पैदा होंगे, शायद वे और भी अनेक नये सिद्धान्तों तक पहुँचेंगे; किन्तु मेरे इस मूल-सिद्धान्त की नींव बालभर भी इधर-उधर नहीं हटेगी। मेरे इस मत के ऊपर सिर्फ़ कुछ और अधिक रंग भर

चढ़ जायगा।

"मनुष्य के जीवन में यह जो दो का द्वन्द्व है, इसकी परिपूर्ण उपलब्धि मुझे अपने ही जीवन में हुई है। मेरे जीवन में यह द्वन्द्व, यह मंथन बहुत दिन पहले शुरू हुआ था। यहाँतक कि मेरी वैज्ञानिक खोज ने जब एक ऐसी संभावना का आभास पाया था जिसे कोई सोच भी नहीं सकता, उससे भी बहुत पहले। इन दोनों—उत्कृष्ट और निकृष्ट—वृत्तियों को बिल्कुल अलग करके, सम्पूर्णरूप से परस्पर विरोधी करके दिखने में मुझे बड़ा ही उत्साह होता था—आनन्द भी बहुत अधिक पाता था।

"मेरी धारणा हुई कि मनुष्य की इन दोनों वृत्तियों को अगर अलग करके उसकी आँखों के सामने रख दिया जाय तो उसके जीवन को एक बहुत बड़ी समस्या का समाधान हो जायगा। मनुष्य अपने चलने की राह छाँट लेने में भूल न करेगा। पापी अपनी छाँटी हुई राह में जायगा और पुण्यात्मा अपनी विशेष राह पर। मनुष्य के जीवन में यही सबसे बड़ा अभिशाप है कि एक ही मनुष्य को दो या बहुत से द्वन्द्वों—दुविधाओं के बीच जीवन बिताना पड़ता है। इस विराट् द्वन्द्व के चक्कर में पड़कर जीवन भर उसे अपनी यथेष्ट शक्ति क्षय करनी पड़ती है। उसके बाद मनुष्य शक्तिहीन होकर अपने को कंगाल बना

लेता है। समाज की सेवा के लिए उसके पास फिर कुछ भी नहीं रहता। ख़ैर वह चाहे जो हो, अब मैं यह बताऊँगा कि मनुष्य की पाप और पुण्य की दोनों प्रवृत्तियों को किस तरह अलग किया गया।

"तब मैं अपनी वैज्ञानिक खोज में एकदम डूबा हुआ था—तन्मय हो रहा था, ऐसे ही समय में एक दिन मेरे मन में एक नया अद्भुत प्रकाश देख पड़ा। किसी ने जैसे मुझे याद करा दिया कि मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा रहस्य क्या है। यह रक्त-मांस की देह कैसे चलती-फिरती है, और दम भर में ही कहाँ क्या हो जाता है कि वही देह काल के कराल मुँह में चली जाती है! फिर उसे पृथ्वी का प्रकाश देखने को नहीं मिलता—यहाँ की हवा खाने को नहीं मिलती! इस जगत् का उसका खेल समाप्त हो जाता है। फिर भी इस क्षण भर में मिट जाने वाली देह के ऊपर—जो अविनाशी आत्मा का एक आधारमात्र है—मनुष्य को कितना मोह है, कितनी ममता है, कितना दर्द है! इसके अवश्य होने वाले परिणाम को जानकर भी मनुष्य की यह कैसी मूर्खता है! अन्त को मैंने इस परिपूर्ण देह को सम्पूर्ण रूप से दूसरे रूप में बदलने की औषध का आविष्कार कर ही लिया। लेकिन इस औषध से भी मैं उसे हमेशा के लिए बचा न रख सकूँगा—अमर न

बन सकूँगा। केवल इसलिए भी और मुझे अपनी साधना में सम्पूर्ण सिद्धि नहीं प्राप्त हुई, इसलिए भी, मैं अपने आविष्कार की वैज्ञानिक व्याख्या नहीं करना चाहता। सिर्फ़ इतना ही कहना चाहता हूँ कि अपनी निकाली हुई औषध का प्रयोग चाहे और किसी पर करूँ और चाहे अपने ऊपर ही प्रयोग करूँ, नतीजा एक ही होगा—इस औषध के सेवन से एक विराट् शक्ति उत्पन्न होगी, जो भीतर के देवता को अच्छी तरह पीस डालेगी, उसका चिह्न भी न रह जायगा, और उसकी जगह एक पाप की या शैतान की प्रतिमूर्त्ति खड़ी कर देगी।

"अपनी खोज की सफलता पर मुझे खूब ही विश्वास पैदा हो गया था। मैं पक्की तौर से जानता था कि इस औषध का सेवन करते ही देह के ऊपर इसका काम शुरू हो जायगा। मेरा चित्त डावाँडोल हो उठा। मैंने यह तय किया कि इसकी परीक्षा मैं अपने ही ऊपर करता रहूँगा। यह तय करने के पहले कितनी ही बातें मन में उठी थीं। इसके परिणाम को सोचकर मैं काँप उठा था। तो भी मैंने अपनी राय नहीं बदली। मैं जानता था कि जो काम मैं करने जा रहा हूँ, वह अपनी इच्छा से अपनी मौत को बुलाना ही है; क्योंकि जिस औषध में इतनी बड़ी शक्ति भरी पड़ी है, उसके प्रयोग में थोड़ी-सी भी असावधानी

होने से मैं एकदम बदल जाऊँगा, एक उथल-पुथल मच जायगी ! किन्तु जब मैंने इस आविष्कार की बात सोची है, तभी मेरे मन और हृदय पर एक विराट नशा-सा छा गया है। सृष्टि की उत्तेजना से मैं पागल हो उठा हूँ। शीघ्र ही मैं औषध की परीक्षा के लिए तैयार हो गया।

"वह एक मनहूस रात थी। वह मेरे जीवन के नये अध्याय की घड़ी थी। दवाओं को ठीक तौर से, सावधानी के साथ मिलाकर तैयार करके 'ईश्वर का नाम लेकर एक साँस में मैं सब पी गया। ओह ! मेरे भीतर उसकी वह कैसी असह्य प्रतिक्रिया शुरू हुई, क्या बताऊँ ! मेरी सब हड्डियाँ जैसे चूर-चूर हो जाने लगीं। उत्तेजना से, भय से, शिथिलता से थर-थर करके काँपने लगा। शरीर के भीतर भयानक मंथन-सा होने लगा। एक ज़ोर की उबकाई आई, पर उसे मैंने सँभाल लिया। इसके बाद दोनों हाथों से मुँह बंद किये मैं फ़र्श पर सिकुड़ा पड़ा रहा। जल्दी ही मेरी यह दशा बदल गई। जैसे मैं तक़दीर के ज़ोर से एक बड़ी असाध्य बीमारी से छुटकारा पाकर चंगा हो उठा। मेरे सारे शरीर में एक नया स्पन्दन, एक नई अनुभूति जाग उठी। केवल इस नयेपन के कारण ही यह अनुभूति मुझे बड़ी मनोरम, बड़ी लुभावनी लगी। मुझे अपना शरीर और भी हलका जान पड़ा। एक फुर्ती-सी आ गई। आनंद

के आवेश से मैं अभिभूत हो पड़ा। लेकिन अपने इस नये जन्म में मैंने अनुभव किया कि मैं जैसे चरित्र से भ्रष्ट होकर दसगुना नीचे उतर गया हूँ, मेरा घोर अधःपतन हो गया है। उस समय केवल पाप के विचारों ने ही मेरे मन पर अधिकार कर लिया। पाप-विचारों से जैसे मुझको आनन्द भी मिला। इसके बाद एकाएक देखा, मैं जैसे आकार में भी बहुत छोटा हो गया हूँ।

"उस समय रात प्रायः समाप्त हो चुकी थी, सवेरा होने ही वाला था। घर के सब लोग—नौकर-चाकर—पड़े सो रहे थे। विजय के आनन्द से उत्फुल्ल होकर मैं अपने सोने के कमरे की ओर चल दिया। आँगन पार होकर दालान में आया। मैं उस समय जैसे अपने ही घर में कोई नया आनेवाला आदमी था। इसके बाद दबे-पाँव अपने कमरे में आया। बड़े आइने में नज़र पड़ते ही मैं चौंक उठा—उसमें एडवर्ड हाइड की मूर्त्ति झाँक रही थी।

"अपने भीतर के इस पापी मनुष्य का नाम मैंने रखा था एडवर्ड हाइड। वह था दुर्बल और ठिंगने डील का। जेकिल की तुलना में उसकी उम्र भी बहुत कम थी। जेकिल की सारी देह, चेहरे और आँखों में प्रकट था जो कुछ अच्छा है, जो कुछ सुन्दर है और हाइड के अँगों में एक शैतान की मूर्त्ति प्रकट हो उठी।

"काफी देर तक मैं आईने की तरफ़ ताकता रहा। इसके बाद फिर अपनी लेबोरेटरी में लौट आया। पहले से वहाँ और एक दवा का गिलास मैंने तैयार कर रखा था। उसे पीते ही मैं फिर जेकिल बन गया। लेकिन भाग्य ने मेरे साथ दिल्लगी की—मुझे निर्मम खूनी का नाम मिला!

"यहाँ पर अपने भाग्य को धिक्कार दिये बिना मुझसे रहा नहीं जाता। मेरे जीवन की साधना का यह आविष्कार है। इसके लिए विश्व के दरबार से मुझे भारी सम्मान मिलना चाहिए था। लेकिन भाग्य की दिल्लगी तो देखो, मुझे 'निर्मम हत्यारा' की उपाधि प्राप्त हुई!

"इसके बाद मैं जल्दी-जल्दी बारम्बार हाइड बनकर घूमने-फिरने लगा। पहले मैं हाइड के रूप को देखकर हँसे बिना नहीं रहता था। उसके बाद सब सहन हो गया। मैंने 'सोहो' के घर को अच्छी तरह सजा दिया। वहाँ एक नौकरानी रख दी। उसके जिम्मे में रहा वह घर और हाइड। मैं उस घर का मालिक हुआ।

"उस घर में भी एक बन्दोबस्त करना हुआ। नौकर-चाकरों को मैंने कड़ी ताकीद कर दी कि मेरे मित्र मि० हाइड भी उनके एक मालिक हैं। मेरा जैसा वे सम्मान करते हैं, मुझे जिस तरह मानते हैं, उससे ज़रा भी कम हाइड को न मानें। इसके बाद मैंने अपना वसीयतनामा

लिखकर तैयार किया। उसका मतलब और कुछ नहीं, यही था कि अगर कभी औषध की गड़बड़ में कुछ अस्वाभाविक घटना घटित हो जाय—और भी स्पष्ट करके कहूँ, अगर हाइड से फिर जेकिल न बन सकूँ, तो भी मेरी यह सारी भारी जायदाद लावारिस होकर हाथ से बेहाथ न होगी। हाइड के नाम से ही मैं इसका उपभोग करता रहूँगा। इस तरह इतनी चौकसी करके हाइड और जेकिल, इन दो रूपों से चलने-फिरने का साहस मुझे हुआ था।

"पहले ही कह चुका हूँ कि हाइड के रूप में मैं पाप का साक्षात् अवतार एक शैतान था। एक के बाद एक पाप मैंने इस रूप में किया है। सबका वर्णन करने के लिए यह कागज़ काफ़ी न होगा। उसके लिए एक बड़ा-सा पोथा लिखना पड़ेगा। एक दिन गहरी रात को सूनी सड़क पर सन्नाटे में मैंने एक मासूम लड़की को चोट पहुँचाई। उसके लिए मुझे यथेष्ट अपमान सहना पड़ा। लड़की के आत्मीय-स्वजन मुझे मारने-पीटने को तैयार हो गये थे। एक राह-चलते भले आदमी के बीच में पड़ने से एक हज़ार पौंड दण्ड देकर उस बार मुझे छुट्टी मिली—किसी तरह मेरी जान बची थी। उस दिन उस भले आदमी को मैंने तुम्हारे साथ देखा था—वह तुम्हारे ही आत्मीय हैं—मिस्टर एन्फ़ील्ड।

"सर डन्वर्स कैरो की हत्या के लगभग दो महीने पहिले की बात है। हाइड का रूप रखकर एक दिन रात को हमेशा की तरह घूमकर आया। लौटने में बहुत रात हो गई थी। लेकिन सवेरे ही आँख खुल गई। आँख खुलते ही सारे शरीर में एक कँप-कँपी-सी मालूम हुई। इस अनुभूति के साथ में बहुत दिनों से परिचित हूँ। ले कन बेवक्त यह क्यों मेरे शरीर में पैदा हुई, इसका कारण मुझे ढूँढे नहीं मिला। अच्छी तरह आँखें खोलकर देखा, मैं जैसे एक अपरिचित स्थान में सो गया था। तड़ाक से उठ खड़ा हुआ—आईने के सामने जा खड़ा हुआ। अपने प्रतिबिंब को देखकर मुझ-से हँसे बिना नहीं रह गया—मैं हाइड बन गया था। मेरा (जेकिल का) चेहरा देखकर तुम लोगों ने उसकी कितनी तारीफ़ की है; लेकिन यह चेहरा देखकर तुम भय से काँप उठते—चौंक पड़ते!

"सोहो-स्थित घर के सिवा हाइड के रूप में मैंने और कहीं रात नहीं काटी थी। अब अपने घर में हाइड बनकर मैं बड़े ही संकट में पड़ गया। दिन काफ़ी चढ़ आया था —नौकर-चाकर सब जाग पड़े थे। सोने के कमरे से लेबो-रेटरी के कमरे तक जाना ही मुशकिल हो गया। और, लेबारेटरी के कमरे में न जा सकने से तो मैं फिर जेकिल नहीं बन सकूँगा। दवा का सब सामान तो वहीं पर है। इसके

बाद सोचा कि इसी सूरत से जाने में ही हानि क्या है ? हाइड का भी तो मैंने सबसे परिचय करा दिया है—उसे भी तो सब मेरा अभिन्न मित्र जान गये हैं। बस, और समय नष्ट न करके अपनी पोशाक में ही हाइड के रूप से निकल पड़ा। पहले सामना ब्रैड से हुआ। इतने सबेरे इस अवस्था में हाइड को देखकर वह अचरज से आँखें फैलाये ताकता रह गया। लेकिन उसे हाइड से कुछ पूछने या कहने का हुक्म नहीं था। वह कुछ बोला नहीं। मैं निर्विकार भाव से धड़धड़ाता हुआ लेबोरेटरी के कमरे में चला गया। और दस मिनट के भीतर ही जेकिल का रूप धारण कर सवेरे का नाश्ता करने बैठ गया।

"इसके कई दिन बाद मैंने आश्चर्य के साथ लक्ष्य किया कि हाइड का चेहरा लंबाई-चौड़ाई में खूब बड़ा हो गया है। तब मेरे मन में बड़ा खटका पैदा हुआ। अगर इसी तरह हाइड बढ़ता रहा तो एक दिन मैं जेकिल के चरित्र को एकदम खो बैठूँगा और मुझे जीवन भर पूरी तौर से हाइड के चरित्र को लेकर ही रहना पड़ेगा। अतएव बस, अब नहीं। इस अभिनय पर ड्रापसीन गिराना होगा अब—हाइड मरेगा।

"हाइड मरेगा, यह सोचने से ही मन को बड़ा सुख मिला। यह सौन्दर्य से भरी पृथ्वी है। प्रकृति ने इसे रूप,

रस, गंध और माधुर्य आदि से कैसा सजा रखा है! प्रकृति के इस दान से—सच्ची पृथ्वी के प्रकाश और हवा से मैं अभी वंचित हूँ। मेरा समाज, मेरे इष्ट-मित्र और बन्धु-बान्धव—जिनसे में अबतक हार्दिक स्नेह और प्रेम पाता आया हूँ—उन सबके साथ अब मैं और सब लोगों की तरह मिलूँ-जुलूँगा, आमोद-प्रमोद करूँगा। मन प्रसन्नता से भर गया। हाइड की चिन्ता धीरे-धीरे भूल जाने की चेष्टा करने लगा। लेकिन शुरू में ही एक भूल कर बैठा। सोहोवाला घर और उसकी पोशाक जैसी थी, वैसी ही रहने दी। दो महीने खूब मज़े में कटे। इसके बाद इस भूल का प्रायश्चित शुरू हो गया। हाइड बनने की एक अदम्य इच्छा मन में उत्पन्न हुई, मैं किसी तरह दबा नहीं सका। औषधें पास ही थीं। एक मानसिक दुर्बलता के क्षण में उन दवाओं के मिश्रण को आँख-नाक बंद करके मैं पी गया। साथ-ही-साथ मैंने अनुभव किया, जैसे एक जंगली जानवर, जो अबतक जंज़ीर से बँधा था, छूटकर बाहर निकल आया। इस परिवर्त्तन का फल यह हुआ कि मेरे कुकर्मों की सूची में और भी एक भारी कुकर्म की संख्या बढ़ गई। जनसाधारण सुनकर स्तंभित हो गये—सर डन्वर्स कैरो निष्ठुर नृशंस भाव से मारे गये। कुछ दिन इस घटना को लेकर खूब हो-हल्ला मचा—लंदन के गली-कूचों तक

में हाइड की खोज-पड़ताल होती रही। हाइड का भी पता नहीं लगा और यह मामला भी दब गया।

"इसके बाद की एक दिन की घटना कहे बिना मैं अपने इस आत्मवृत्तान्त को समाप्त नहीं कर पा रहा हूँ। इस संबंध में मैंने अपने सहपाठी मित्र डाक्टर लेनियन की सहायता चाही थी। और उसकी सहायता से ही उस बार मैं किसी तरह बच ज़रूर गया, लेकिन बेचारे लेनियन ने जान गँवा दी।

"जनवरी महीने के उस सूर्य की किरणों से जगमगाते हुए दिन की याद आज भी मुझे बनी हुई है। रीजेंट-पार्क की एक बेंच पर मैं बैठा था। सिर के ऊपर आकाश में पानी से ख़ाली बादल और चारों ओर को सुहावनी मृदु-मंद ठंडी हवा से मन बहुत ही प्रसन्न हो रहा था। इसी समय मेरे मन में धीरे-धीरे वही हाइडवाली अनुभूति जगने लगी। एक अज्ञात आशंका से मेरा कलेजा काँप उठा। साथ ही मेरी पोशाक ढीली-ढाली होने लगी। आकार भी मेरा बहुत छोटा हो गया। वैसे ही मैंने अपने को देखा—मैं सम्पूर्ण हाइड की शकल में बैठा था।

"प्रकट दिन के प्रकाश में, पार्क की बेंच पर खूनी हाइड बैठा है—यह बात लोगों को मालूम हो जाने पर फिर जान न बचेगी। रूमाल मुँह पर डालकर—किसी

तरह अपने को छिपाकर कुछ देर तक मैं यह सोचता रहा कि अब मुझे क्या करना चाहिए। अगर मैं यह जानता कि मुझे ऐसी परिस्थिति में पड़ना पड़ेगा तो मैं वे दवाएँ अपनी जेब में ही डाले रखता। वे इस समय कमरे की आलमारी में ताले में बंद पड़ी हैं। अपने हाथ से जब उन्हें लाना संभव नहीं है, तब और किसी की सहायता चाहिए। सोचते-सोचते लेनियन की याद आ गई। मैं जानता था, मेरा चेहरा बदल जाने पर भी हाथ की लिखावट नहीं बदलती। लेनियन को अनुरोध करके एक चिट्ठी लिख देने से ही शायद वह दवाएँ लाकर दे सकता है!

"और समय नष्ट करने का साहस नहीं हुआ। ढीली-ढाली पोशाक को किसी तरह सँभालकर पार्क से निकल पड़ा। पास ही एक गली के भीतर एक होटल मिल गया। उसी के एक कमरे को जाकर ले लिया। मेरा चेहरा और पोशाक देखकर होटल का बैरा डर गया। मैंने उसे पहले ही कुछ बख़शीश दे दी। वह लिखने का सब सामान ले आया। चटपट दो चिट्ठियाँ मैंने लिख डालीं। एक में लेनियन से अनुरोध किया कि वह पूल की सहायता से मेरे कमरे का दर्वाज़ा तोड़कर औषध जिसमें रखी है वह दराज निकाल ले और अपने घर में, रोगी देखने के कमरे में अपेक्षा करे। इतनी खुशामद और चिरौरी से मैंने चिट्ठी

भर दी कि उसमें अपना मतलब लिखने के लिए भी थोड़ी-सी ही जगह रह गई। दूसरी चिट्ठी मैंने पूल को लिखी कि वह कमरे का दर्वाज़ा तोड़कर भीतर जाने में लेनियन को पूरी मदद दे। मुझे यह व्यवस्था इसलिए करनी पड़ी कि हाइड के रूप में अपने घर तक मेरा जाना मुझे ख़तरे से ख़ाली नहीं जान पड़ा। मैंने यह प्रबंध किया था और लेनियन और पूल, दोनों ने मेरी बात मान ली थी, इसी से उस दफ़े हाइड के प्राण बच गये। हाँ, हाइड के प्राण बच गये, यह कहने में मेरा विवेक मुझे रोक रहा है। मैं एक डाक्टर जेकिल—शहर का गण्य-मान्य डाक्टर और वैज्ञानिक जेकिल हूँ; और वह (हाइड) नरक के एक घृणित कीड़े के सिवा और कुछ न था। उसकी कैसे जान बची, यही अब बताता हूँ।

"दिन भर होटल की एक कोठरी में बन्द रहकर उसने बिताया। रात का अन्धकार पृथ्वी पर उतर आया। उसने एक बार बाहर झाँककर देख लिया कि वह अंधकार कितना घना है। क्रमशः वह बस्ती निर्जन हो आई। हाइड होटल का बिल चुकाकर बाहर सड़क पर आया। थोड़ी ही दूर पर एक टैक्सी खड़ी थी! ड्राइवर को इशारा करते ही वह पास ले आया। बिना कुछ कहे-सुने हाइड उस पर सवार हो गया। गाड़ी इस गली से उस गली घूमने लगी।

अन्त को उसने जब जान पाया कि ड्राइवर को उस पर सन्देह हो रहा है, तब गाड़ी रुकवाकर, भाड़ा चुकाकर, उसको बिदा कर दिया।

"अब हाइड वह ढीली-ढाली पोशाक समेटकर लंबे-लंबे डग भरता हुआ अंधकार में तेज़ी से चलने लगा। उसकी यह हालत देखकर अनेक लोग उसकी ओर ताकने लगते थे। कोई हँसा, किसी ने कहा— कोई पागल है' एक दयावती महिला उसे दियासलाई का बक्स देने आई; किन्तु उसके मन की दशा कहाँ ऐसी थी कि वह सहायता लेता? उसने उलटकर उस महिला के मुँह में ज़ोर से काट खाया। महिला भय के मारे प्राण लेकर भाग खड़ी हुई।

"इसके बाद किसी तरह कवेंडिस स्क्वायर में पहुँचकर वह लेनियन के घर घुस गया। लेनियन मेरी चिट्ठी के निर्देश के माफ़िक़ हाइड के आने की राह देख रहा था। औषध वाली दराज उसके पास ही थी। इसके बाद उस औषध के ठीक-ठीक प्रयोग से हाइड का रूप बदल गया और डा० लेनियन के सामने उनके मित्र डा० जेकिल की मूर्त्ति प्रकट हो गई।

"डा० लेनियन ने सब कुछ देखा। उसने उसे एक जादू या भौतिक काण्ड समझ लिया। भय से विवर्ण होकर, दीवाल से सटकर, निस्तब्ध-निस्पंद होकर, खड़ा

रहा। मैंने उससे सब बात समझाकर कही। मालूम नहीं मेरी बात उसकी कानों में पहुँची कि नहीं। बहुत देर तक उसकी आँखों में—चेहरे पर भय के चिह्न बने रहे। मैं धीरे-धीरे उसके घर से निकल आया। बेचारा लेनियन इसके बाद सिर्फ़ कई दिन ही जीवित रहा।

"मैं घर ज़रूर लौट आया; लेकिन दूसरे दिन सवेरे का नाश्ता करने के बाद फिर वही अनुभूति सारे शरीर में धीरे-धीरे जगने लगी। जल्दी ही मैं हाइड हो गया। अब की अपने रूप में लौट आने के लिए मुझे दूनी मात्रा में उस औषध का मिश्रण पीना पड़ा। उस दिन मैं केवल छः घंटे तक जेकिल था। उसके बाद फिर हाइड हो गया। फिर जेकिल के रूप में लौट आने में मुझे अधिक औषध की मात्रा बढ़ानी पड़ी।

"इसके बाद मैं इतना जल्दी-जल्दी हाइड हो जाने लगा कि नित्य ही हाइड होने की अनुभूति मेरे भीतर जगी रहती थी। अन्त को ऐसी अवस्था आकर पहुँच गई कि सोकर उठते ही देखता, मेरा चेहरा बदल गया है—मैं हाइड हो गया हूँ। यहाँ तक कि यदि कभी कुर्सी पर बैठे-बैठे तंद्रा आ गई तो तंद्रा टूटते ही देखता कि मैं अकस्मात् हाइड हो गया हूँ। इसके बाद बहुत-सी दवा पीकर, बहुत कष्ट उठाकर जेकिल बन पाता था—वह भी केवल कुछ ही घंटों के लिए।

"जो दवाएँ मेरे काम में लगती थीं, उनमें नमक की क़िस्म की एक दवा ही सबसे मुख्य और आवश्यक थी। यह दवा मैंने बहुत-सी तादाद में ख़रीद रखी थी। लेकिन उसकी मनमानी मात्रा बार-बार प्रायः नित्य ही—ख़र्च करने से धीरे-धीरे वह ख़तम हो चली। अन्त को मेरा भण्डार एकदम ख़ाली हो गया। घर के भीतर हाइड के रूप में बंदी होकर उस दवा के एक बूँद के लिए मैं सिर पटका किया; पर वह मिली नहीं।

"पूल को भेजकर सारा लंदन शहर छान डाला। दवा उसे कहीं नहीं मिली। पहले जो दवा मैंने ख़रीदी थी, उसमें मिलावट थी। मेरे भाग्य में वह मिलावटी दवा ही काम करनेवाली सिद्ध हुई थी। अब जो असल औषध आई तो उससे मेरा कोई काम नहीं निकला। मैंने दूकानदार को एक बार लिख भेजा कि असल नहीं, वह मिलावटी दवा ही मुझे चाहिए। उसे मैंने जब ख़रीदा था, वह तारीख़ भी लिख भेजी। लेकिन इससे डाक्टरख़ाने के आदमी बिगड़ उठे। शायद उन्होंने बिना जाने ही वह नक़ली या बनावटी दवा बेची होगी—अब यह समझ पाकर कि वह दवा मिलावटी थी, वे सावधान हो रहे हैं।

"मैं अच्छी तरह समझ रहा हूँ कि जेकिल के जीवन का अन्त हो गया है। उसके बदले पृथ्वी पर हाइड नाम

कीएक पापमूर्त्ति शैतान रह गया है। अतएव अब मैं अपने वृत्तान्त की यहीं समाप्त करता हूँ। हाइड मरेगा कि जियेगा—फाँसी पर लटकेगा कि अपने को बचा लेगा, इस सम्बन्ध में मेरा सोचना या चिन्ता करना व्यर्थ है। दस आदमी उसे खड़े होकर देखेंगे। अब इस विवरण को लिफाफे में बन्द करने के साथ-साथ तुम यह मान ले सकते हो कि तुम्हारा मित्र चिर-दुखी जेकिल मर गया।"

इति—